# सूचना

दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित बी. एड. पाठ्यक्रम सत्र 2016-18 के समस्त बी.एड. प्रशिक्षणार्थियों को सूचित किया जाता है कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी 6 दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला जिसका विषय "शिक्षक शिक्षा गुणवत्ता संवर्धन के विविध आयाम" है, दिनांक 19/3/2018 से 24/3/2018 को प्रात: 10 बजे से सायं 5 बजे तक विश्वविद्यालय के गालिब सभागार में आयोजित की जा रही है।

उक्त कार्यशाला में सत्र 2016-18 के प्रशिक्षाणर्थियों की सहभागिता अनिवार्य है।

सहायक कुलसचिव / Assistant Registrar
दूर शिक्षा निदेशालय / Directorate of Distance Education
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
वर्धा / WARDHA- 442 001 (महा./ M.S.)

## बी.एड.(दूरशिक्षा) कार्यशाला प्रतिवेदन रिपोर्ट

दिनांक 19/03/2018 से 24/03/2018

### विषय –शिक्षक शिक्षा गुणवत्ता संवर्धन के विविध आयाम

**दिनांक 19/03/2018 को सुबह 10:30 से 11:30 उद्घाटन सत्र**

इस सत्र का शुभारंभ दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक द्वारा किया गया । निदेशालय के सभी शिक्षक एवं भागीदार इस सत्र में उपस्थित थे। निदेशक महोदय ने कार्यशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुये बताया की इस कार्यशाला में तृतीय सेमेस्टर में के प्रायोगिक कार्य के सभी प्रकरणो पर विभिन्न सत्रों में चर्चा की जाएगी जो आप के लिए लाभकारी होगी।

**द्वितीय सत्र 11:30 से 12:30** में विशेष व्याख्यान के अंतर्गत प्रो.अरविंद कुमार झा ने भारतीय शिक्षा दर्शन पर विस्तार से अपने विचार रखे। उन्होंने व्याख्या की कैसे भारतीय दर्शन पश्चिम के दर्शन से अलग है।

**तृतीय सत्र 1:30 से 2 :30** इस सत्र में डॉ.गुणवंत सोनोने ने सूक्ष्म शिक्षण पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने सूक्ष्म शिक्षण कि आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**चतुर्थ सत्र 2:30 से 3 :30** इस सत्र में डॉ.आदित्य चतुर्वेदी ने सूक्ष्म शिक्षण के विभिन्न कौशलों को विस्तार से समझाया।

**पंचम सत्र 3:30 से 4:30** इस सत्र में डॉ. गिरीश पाण्डेय ने कम्प्युटर एवं उसके अनुप्रयोग पर अपने विचार रखते हुये कम्प्यूटर के विभिन्न घटकों की जानकारी दी। उन्होंने कम्प्यूटर के शिक्षणशास्त्रीय उपयोग पर भी प्रकाश डाला ।

**दिनांक 20/03/2018 को सुबह 10:30 से 1 2:30** के सत्र में सभी शिक्षकों ने अपने अपने विषय की पाठ योजना के विषय में जानकारी दी और विभिन्न प्रकार की पाठ योजनाओं के विषय में बताया।

भोजन अंतराल बाद **1:30 से 4:30** के सत्र में छात्रों ने सूक्ष्म पाठ योजना बनाकर अपना प्रस्तुतीकरण किया।

**दिनांक 21/03/2018 को सुबह 10:30 से 11:30** प्रथम सत्र में श्री ब्रह्मानन्द मिश्र के मूल्यांकन एवं उसके प्रकार पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**द्वितीय सत्र 11:30 से 12:30** -इस सत्र में में डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने उपलब्धि परीक्षण कैसे बनाया जाता है इसको विस्तार से समझाया। एक शिक्षक को उपलब्धि परीक्षण बनाने की आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे साथ ही ब्लू प्रिंट बनान भी सिखाया।

**तृतीय सत्र 1:30 से 3:3-** इस सत्र में डॉ.गुणवंत सोनोने ने प्रकरण अध्ययन के चरणों को विस्तार से समझाया और उसका प्रयोगात्मक महत्व पर प्रकाश डाला।

**चतुर्थ सत्र 3:30 से 4:30 -** इस सत्र में में डॉ.समीर पाण्डेय ने समुदाय के साथ अंतःक्रिया पर विचार प्रस्तुत किए।

**दिनांक 22/03/2018 को सुबह 10:30 से 11:30** इस सत्र में में डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने मनोविज्ञान प्रयोगात्मक के अंतर्गत छात्रों को बुद्धि परीक्षण एवं व्यक्तित्व परीक्षण की जानकारी दी।

**द्वितीय सत्र 11:30 से 12:30** इस सत्र में क्रियात्मक अनुसंधान पर डॉ.समीर पाण्डेय ने विस्तार से समझाया।

**तृतीय सत्र 1:30 से 2:30 -** इस सत्र में क्रियात्मक अनुसंधान के प्रयोगात्मक पक्ष को डॉ.समीर पाण्डेय ने कराया।

**चतुर्थ सत्र 2:30 से 3:30-** इस सत्र डॉ.गुणवंत सोनोने ने विभिन्न प्रकार के विद्यालय अभिलेख छात्रों को बतलाए एवं उन्हें भरना सिखाया।

**पंचम सत्र 3:30 से 4:30 -** इस सत्र में विद्यालय अभिलेख की आवश्यकता एवं विद्यालय से संबन्धित जानकारी श्री ब्रह्मानन्द मिश्र द्वारा दी गई।

**दिनांक 23/03/2018 को सुबह 10:30 से 11:30 -**इस सत्र डॉ.गुणवंत सोनोने ने शिक्षा तकनीकी की आवश्यकता एवं शिक्षा में उसके महत्व पर प्रकाश डाला।

**द्वितीय सत्र 11:30 से 12:30** -इस सत्र में शैक्षिक निर्देशन एवं परमर्श पर श्री ब्रह्मानन्द मिश्र द्वारा अपने विचार प्रस्तुत किए।शिक्षा जगत में उसकी उपयोगिता की जानकारी दी।

**तृतीय सत्र 1:30 से 2:30 -** इस सत्र में डॉ.समीर पाण्डेय ने जेंडर विद्यालय एवं समाज विषय पर अपना व्याख्यान दिया। वर्तमान परिस्थिति में विषय की उपयोगिता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**चतुर्थ सत्र 2:30 से 4:30 -**इस सत्र में सभी शिक्षकों ने सत्रांत शिक्षण से संबन्धित जानकारी एवं उनके प्रश्नों के उत्तर दिये।

**दिनांक 24/03/2018 को सुबह 10:30 से 11:30** इस सत्र में डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने ज्ञान एवं पाठ्यचर्या विषय पर अपने विचार विस्तारपूर्वक रखे।

**द्वितीय सत्र 11:30 से 12:30 -**इस सत्र में पर्यावरण शिक्षा पर डॉ.पल्लवी शुक्ला ने अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। वर्तमान परिपेक्ष्य में पर्यावरण शिक्षा क्यों पढ़ाई जाना चाहिए,इस पर उन्होंने छात्रों से चर्चा की।

**तृतीय सत्र 1:30 से 4:30-** समापन सत्र में छात्रों ने कार्यशाला से प्राप्त अनुभवों को बताया। डॉ.गुणवंत सोनोने ने कार्यशाला प्रतिवेदन पढ़ा एवं डॉ.समीर पाण्डेय ने आभार व्यक्त किया।

## 'शिक्षक शिक्षा गुणवत्ता संवर्धन के विविध आयाम' (राष्ट्रीय कार्यशाला)

### 19 मार्च 2018 से 24 मार्च 2018

| दिनांक | 10:30-11:30 | 11:30-12:30 | 12:30-1:30 | 1:30-2:30 | 2:30-3:30 | 3:30-4:30 |
|---|---|---|---|---|---|---|
| 19/03/2018 | उद्घाटन | विशेष व्याख्यान | भोजनावकाश | सूक्ष्म शिक्षण | विभिन्न प्रकार के कौशल | कम्प्यूटर एवं उसके अनुप्रयोग |
| 20/03/2018 | पाठ योजना एवं उसके प्रकार | | | सूक्ष्म शिक्षण एवं सम्पूर्ण पाठयोजना निर्माण एवं क्रियान्वयन (विद्यार्थियों द्वारा) | | |
| 21/03/2018 | मूल्यांकन एवं उसके प्रकार | उपलब्धि परीक्षण | | प्रकरण अध्ययन | प्रकरण अध्ययन प्रयोगात्मक | समुदाय के साथ अंतक्रिया |
| 22/03/2018 | मनोविज्ञान प्रयोगात्मक | क्रियात्मक अनुसंधान | | क्रियात्मक अनुसंधान (प्रयोगात्मक) | विद्यालय के विभिन्न अभिलेख | आवश्यकतानुसार अन्य उपयोगी जानकारी |
| 23/03/2018 | शिक्षा तकनीकी | शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श | | जेंडर, विद्यालय एवं समाज | सत्रांत शिक्षण से सम्बन्धित जानकारी | |
| 24/03/2018 | ज्ञान एवं पाठ्यचर्या | पर्यावरण शिक्षा | | समापन | | |

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

ज्ञान शांति मैत्री

टोल फ्री नं. + 18002331575

डॉ. एम.एम. मंगोड़ी
क्षेत्रीय निदेशक : दूर शिक्षा निदेशालय
Dr. M.M. Mangodi
Regional Director: Directorate of Distance Education

पत्रांक : 023/बी.का.प.स.आ./2018/31/1464
दिनांक : 16/05/2018

# सूचना

दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा संचालित बी.एड पाठ्यक्रम, सत्र 2017-19 के समस्त छात्राध्यापकों को सूचित किया जाता जाता है कि राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद (एन.सी.टी.ई) के नियमानुसार दूरस्थ शिक्षा में बी.एड पाठ्यक्रम हेतु 6 दिवसीय कार्यशाला दिनांक 25-05-2018 से 30-05-218 समय पूर्वाह्न 10:00 से सांय 06:00 तक वर्धा मुख्यालय के ग़ालिब सभागार में आयोजित है।

उक्त कार्यशाला में समस्त छात्राध्यापकों की उपस्थिति अनिवार्य है।

16/5/18
(क्षेत्रीय निदेशक)



Scanned by CamScanner

# बी.एड.(दूरशिक्षा) कार्यशाला प्रतिवेदन रिपोर्ट

**दिनांक 25/05/2018 से 30/05/2018**

## विषय –दूर शिक्षा में शिक्षण एवं अधिगम की नवाचारी पद्धतियाँ

**दिनांक** 25/05/2018 को प्रथम सत्र में विश्वविद्यालय में सम्पन्न विभिन्न गातिविधियों के विषय में डॉ.गुणवंत सोनोने ने जानकारी दी।

**उद्घाटन सत्र -** इस सत्र का शुभारंभ विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति द्वारा किया गया इस अवसर पर मा. प्रति कुलपति एवं दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक, सभी शिक्षक एवं छात्र उपस्थित थे। माननीय कुलपति ने दूर शिक्षा में शिक्षण एवं अधिगम की नवाचारी पद्धतियाँ पर अपने विचार रखे।

**तृतीय सत्र** -इस सत्र में डॉ.वीरपाल सिंह एन.सी.ई.आर.टी,दिल्ली ने अपना व्याख्यान दिया उन्होंने शिक्षण कौशलों कि आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**चतुर्थ सत्र -**इस सत्र में डॉ.तक्षा शंभरकर ने अभिक्रमित अनुदेशन की शिक्षा में क्या उपयोगिता है, इस पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

**पंचम सत्र-** इस सत्र में प्रो.अवधेश कुमार ने हिन्दी के महत्व पर अपने विचार रखते हुये कहा कि हिन्दी को छात्र ध्यानपूर्वक नहीं पढ़ते फिर लिखने एवं पढ़ने में छोटी छोटी गलती करते हैं।

**षष्ठम सत्र -** इस सत्र में डॉ. चित्रा माली ने शिक्षा का शैक्षिक दर्शन एवं शिक्षण शास्त्र पर विस्तार पूर्वक अपने विचार रखे।

**दिनांक 26/05/2018 को प्रथम सत्र** में श्री रजनीश अग्रहरी ने शैक्षिक आकलन एवं मूल्यांकन के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के मूल्यांकन विधियों को बतलाया एवं उनक उपयोग सिखाया।

**द्वितीय सत्र** - इस सत्र में डॉ.अजय सुराना वनस्थली विद्यापीठ ने शिक्षण में हो रहे नवाचार की जानकारी दी।

**तृतीय सत्र** -इस सत्र में डॉ.शिरीष पाल शिक्षा विद्यापीठ ने मनोविज्ञान का शिक्षा में महत्व पर विस्तार से अपने विचार प्रस्तुत किए।

**चतुर्थ सत्र-** इस सत्र में श्रीमति सरिता चौधरी ने सूक्ष्म शिक्षण पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने सूक्ष्म शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**पंचम सत्र-** इस सत्र में डॉ. वीर पाल शिंघ एन.सी.ई.आर.टी.,दिल्ली ने विभिन्न शिक्षण विधियों की विस्तार से जानकारी दी।

**षष्ठम सत्र -**इस सत्र में श्री शेष कुमार शर्मा ने वर्ग व्यवस्थापन प्रक्रिया एवं प्रभाव पर अपना ओजस्वी व्याख्यान दिया।

**सप्तम सत्र-** इस सत्र में में डॉ.समीर पाण्डेय ने विद्यालय संगठन एवं प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका विषय पर बड़े सरल तरीके से अपने विचार रखे।

**दिनांक 27/05/2018 प्रथम सत्र** में डॉ.गुणवंत सोनोने ने विद्यालय विषय शिक्षण की शिक्षक प्रशिक्षण में भूमिका पर अपना व्याख्यान दिया उन्होंने विषय शिक्षण की आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे।

**द्वितीय सत्र-**इस सत्र में डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने उपलब्धि परीक्षण कैसे बनाया जाता है? इसको विस्तार से समझाया। एक शिक्षक को उपलब्धि परीक्षण बनाने की आवश्यकता एवं महत्व पर अपने विचार रखे साथ ही ब्लू प्रिंट बनान भी सिखाया।

**तृतीय सत्र-** इस सत्र डॉ. एन.एन.प्रधान आर.आई.ई.,भोपाल ने शिक्षा में नई संभावनाओं पर अपने विचार रोचक तरीके से रखे।

**चतुर्थ सत्र -**इस सत्र डॉ. एन.एन.प्रधान आर.आई.ई., भोपाल ने शिक्षा छात्रों से सहज संवाद के माध्यम से शिक्षा के विभिन्न पहलुओं को समझाने का प्रयास किया ।

**पंचम सत्र-** इस सत्र में विद्यार्थियों द्वारा पाठ योजना का प्रस्तुतीकरण किया गया जिसका अवलोकन डॉ.गुणवंत सोनोने डॉ.समीर पाण्डेय एवं श्री रजनीश अग्रहरी द्वारा किया गया।

**षष्ठम सत्र -**इस सत्र में सूचना एवं संचार तकनीकी की वर्तमान शैक्षिक उपादेयता पर डॉ.गुणवंत सोनोने ने विचार व्यक्त करते हुये सूचना तकनीकी का शिक्षा में कैसे उपयोग किया जा सकता है यह जानकारी छात्रों को दी।

**दिनांक 28/05/2018 को प्रथम सत्र** में डॉ.समीर पाण्डेय ने विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व में शिक्षक की भूमिका पर अपना व्याख्यान दिया। उन्होंने बताया कि एक अच्छे शिक्षक में इन दोनों गुणों का होना अति आवश्यक है।

**द्वितीय सत्र-** इस सत्र में डॉ.ज्योत्सना जोशी ,सरोजनी नायडू महिला महाविद्यालय ,भोपाल ने हिंदी पढ़ाने में सुधार की आवश्यकता पर बल दिया।

**तृतीय सत्र -**इस सत्र में प्रो. के.एन.त्रिपाठी बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल ने शिक्षा में मनोविज्ञान की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला।

**चतुर्थ सत्र -** इस सत्र में डॉ.संजीव सोनवाने सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,पुणे ने शिक्षक की वर्तमान समय में भूमिका पर विचार रखे।

**पंचम सत्र -**इस सत्र में प्रो.अरविंद जोशी ,बी.एच.यू. वाराणसी ने समाज की शिक्षा में अवधारणा पर व्याख्यान दिया।

**षष्ठम सत्र -**इस सत्र में प्रो. एस.एन. चौधरी, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय भोपाल ने समाज कार्य के महत्व पर प्रकाश डाला।

**सप्तम सत्र -** इस सत्र में शिक्षा के दार्शनिक परिपेक्ष्य पर डॉ.आदित्य चतुर्वेदी ने दर्शन का शिक्षा से संबंध विषय पर व्याख्यान दिया।

**दिनांक 29/05/2018 के प्रथम सत्र-** इस सत्र में डॉ.आदित्य चतुर्वेदी ने व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम की वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता विषय पर अपने विचार रखे।

**द्वितीय सत्र-** इस सत्र में डॉ.अमित राय ने प्रगतिशील समाज और शांति शिक्षा की अवधारणा पर विचार व्यक्त करते हुये कहा कि एक प्रगतिशील समाज में शांति कि आवश्यकता क्यों है एवं शांति के द्वारा प्रगति कैसे संभव है।

**तृतीय सत्र -**इस सत्र में छात्रों द्वारा पाँच शिक्षण कौशल पर पाठ योजना का निर्माण कराया गया।

**चतुर्थ सत्र -** इस सत्र में शिक्षा से संबन्धित शैक्षिक फिल्म का प्रदर्शन एवं परिचर्चा।

**पंचम सत्र -**इस सत्र में श्री ब्रह्मानन्द मिश्र द्वारा शिक्षार्थी एवं उसका मनोवैज्ञानिक संदर्भ पर अपने विचार प्रस्तुत किये।

**दिनांक 30/05/2018 प्रथम सत्र** में श्री ब्रह्मानन्द मिश्र द्वारा मनोविज्ञान के सिद्धांत की वर्तमान शिक्षा में महत्ता पर व्याख्यान देते हुये शिक्षा में मनोविज्ञान के महत्व को समझाया।

**द्वितीय सत्र-** इस सत्र में प्रो.संसनवाल पूर्व प्रो.देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय इंदौर ने सूक्ष्म शिक्षण पर छात्रों के साथ संवाद करते हुये अपने विचार रखे।

**तृतीय सत्र-** छात्रों द्वारा पृष्ठ पोषण एवं समस्या समाधान शिक्षकों श्री ब्रह्मानन्द मिश्र, डॉ.गुणवंत सोनोने ,डॉ.समीर पाण्डेय, श्री रजनीश अग्रहरी और डॉ.आदित्य चतुर्वेदी द्वारा किया गया।

**चतुर्थ सत्र** –इस सत्र में श्री रजनीश अग्रहरी द्वारा बी.एड. प्रशिक्षण में सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों का शिक्षा के परिपेक्ष्य पर अपना व्याख्यान रखा। उन्होंने बी.एड. प्रशिक्षण की विभिन्न गतिविधियों का एक शिक्षक के लिए महत्व बतलाया।

**समापन सत्र** –इस सत्र की अध्यक्षता माननीय कुलपतिजी ने की। इस अवसर पर प्रति कुलपति,दूर शिक्षा के निदेशक ,सभी शिक्षक एवं बी.एड.के छात्र मौजूद थे। माननीय कुलपतिजी ने छात्रों को एक आदर्श शिक्षक बनने को कहा साथ ही उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। छात्रों ने कार्यशाला के अपने अनुभव को व्यक्त किया।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

दूर शिक्षा निदेशालय

दूर शिक्षा के बी विद्यार्थियों हेतु .एड.

## "दूर शिक्षा में शिक्षण एवं अधिगम की नवाचारी पद्धतियाँ"

## छह दिवसीय राष्ट्रीय कार्यशाला (25/05/ 2018 से 30/05/ 2018)

### समय सारणी

| क्र.सं. | दिनांक/ समय | 10:00 -11:00 | 11:00-12:00 | 12:00 -01:00 | 01:00 02:00 | 02:00 -03:00 | 03:00 -04:00 | 04:00 -05:00 | 05:00 -06:00 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1 | 25/05/2018 | विश्वविद्यालय में संपन्न विभिन्न गतिविधियों का शैक्षिक परिप्रेक्ष -डॉ.गुणवंत सोनोने (दूर शिक्षा निदेशालय) | उद्घाटन सत्र (मा.कुलपति, मा.प्रतिकुलपति, मा निदेशक एवं विशिष्ट अतिथि) | डॉ.विरपाल सिंह (एनसीईआरटी, दिल्ली) | | अभिक्रमित अनुदेशन -श्रीमती तक्षा शंभरकर (शिक्षा विद्यापीठ) | प्रो.अवधेश कुमार (साहित्य विद्यापीठ) | बुनियादी शिक्षा का शैक्षिक दर्शन एवं शिक्षणशास्त्र -डॉ.चित्रा माली (संस्कृति विद्यापीठ) | समकालीन भारत में शिक्षा के विभिन्न आयाम -श्री रजनीश अग्रहरी (दूर शिक्षा निदेशालय) |
| 2 | 26/05/2018 | शैक्षिक आकलन और मूल्यांकन -श्री रजनीश अग्रहरी (दूर शिक्षा निदेशालय) | डॉ.अजय सुराना (वनस्थली विद्यापीठ) | डॉ.शिरीष पाल सिंह (शिक्षा विद्यापीठ) | | सूक्ष्म शिक्षण -श्रीमती सरिता चौधरी (शिक्षा विद्यापीठ) | डॉ.विरपाल सिंह (एनसीईआरटी, दिल्ली) | वर्ग व्यवस्थापन प्रक्रिया एवं प्रभाव- श्री शेष कुमार शर्मा (शिक्षा विद्यापीठ) | विद्यालय संगठन एवं प्रबंधन में शिक्षक की भूमिका -डॉ.समीर पाण्डेय (दूर शिक्षा निदेशालय) |
| 3 | 27/05/2018 | विद्यालय विषय शिक्षण की शिक्षक प्रशिक्षण में भूमिका -डॉ.गुणवंत सोनोने (दूर शिक्षा निदेशालय) | डॉ.एन.एन.प्रधान (आरआईई, भोपाल) | डॉ.एन.एन.प्रधान (आरआईई, भोपाल) | भो ज न | पाठ्य योजना का प्रस्तुतीकरण : विद्यार्थियों द्वारा – श्री रजनीश अग्रहरी, डॉ.गुणवंत सोनोने एवं डॉ.समीर पाण्डेय (दूर शिक्षा निदेशालय) | | | सुचना एवं संचार तकनीकी की वर्तमान शैक्षिक उपादेयता - डॉ.गुणवंत सोनोने (दूर शिक्षा निदेशालय) |
| 4 | 28/05/2018 | विद्यालय प्रबंधन एवं नेतृत्व में शिक्षक की भूमिका -डॉ.समीर पाण्डेय (दूर शिक्षा निदेशालय) | ज्योत्सना जोशी (सरोजनी नायडू महिला महाविद्यालय, भोपाल) | डॉ.के.एन.त्रिपाठी (बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय,भोपाल) | अ व | डॉ. संजीव सोनवने (सावित्रीबाई फुले विश्वविद्यालय,पुणे) | प्रो. अरविंद जोशी (बीएचयु, वाराणसी) | डॉ.एस.एन. चौधरी(बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय,भोपाल) | शिक्षा का दार्शनिक परिप्रेक्ष -डॉ.आदित्य चतुर्वेदी (दूर शिक्षा निदेशालय) |
| 5 | 29/05/2018 | व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम की वर्तमान शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता -डॉ.आदित्य चतुर्वेदी (दूर शिक्षा निदेशालय) | प्रगतिशील समाज और शांति शिक्षा की अवधारणा -डॉ. अमित राय (दूर शिक्षा निदेशालय) | सूक्ष्म शिक्षण -5 कौशलों पर आधारित पाठ योजना निर्माण- श्री रजनीश अग्रहरी, डॉ.गुणवंत सोनोने, डॉ.समीर पाण्डेय, डॉ.आदित्य चतुर्वेदी, श्री ब्रम्हा नन्द मिश्र (दूर शिक्षा निदेशालय) | का श | शिक्षा एवं शिक्षण से संबंधित शैक्षिक फिल्म का प्रदर्शन एवं परिचर्चा -श्री रजनीश अग्रहरी (दूर शिक्षा निदेशालय) | | | शिक्षार्थी एवं उसका मनोवैज्ञानिक संदर्भ -श्री ब्रम्हा नन्द मिश्र (दूर शिक्षा निदेशालय) |
| 6 | 30/05/2018 | मनोवैज्ञानिक सिद्धांत की वर्तमान शिक्षा में महत्ता -श्री ब्रम्हा नन्द मिश्र (दूर शिक्षा निदेशालय) | प्रो.एस.एन.सनसनवाल-पूर्व प्रोफ़ेसर, देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इंदोर | विद्यार्थियों द्वारा पृष्ठपोषण एवं समस्या समाधान- (डॉ.गुणवंत सोनोने, श्री रजनीश अग्रहरी, डॉ.समीर पाण्डेय, डॉ.आदित्य चतुर्वेदी, श्री ब्रम्हा नन्द मिश्र (दूर शिक्षा निदेशालय) | | बी.एड.प्रशिक्षण में संपन्न विभिन्न गतिविधियों का शैक्षिक परिप्रेक्ष श्री रजनीश अग्रहरी (दूर शिक्षा निदेशालय) | समापन सत्र एवं प्रमाणपत्र वितरण (मा.कुलपति, मा.प्रतिकुलपति, मा निदेशक एवं विशिष्ट अतिथि) | | |

# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

# दूर शिक्षा निदेशालय

## शिक्षा स्नातक (बी.एड.) हेतु कार्यशाला

**(12- 17 अक्टूबर, 2020)**

## कार्यशाला प्रतिवेदन

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र के दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा बी.एड. (सत्र: 2018-19 तथा 2019-20) के लिए दिनांक 12- 17 अक्टूबर, 2020 तक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस छ: दिवसीय कार्यशाला के उद्घाटन सत्र के मुख्य वक्ता प्रो. के.पी. पाण्डे, पूर्व कुलपति महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, पूर्व निदेशक, अंतराष्ट्रीय दूर शिक्षा अधिगम केन्द्र, शिमला, हिमाचल प्रदेश एवं वर्तमान में निदेशक, सोसाइटी फॉर हायर एजुकेशन एंड प्रेक्टिकल एप्लिकेशन (शेपा), वाराणसी के आशीर्वचन के द्वारा किया गया। इनके द्वारा अपने वक्तव्य में संकल्प से सिद्धि की ओर अग्रसर होने की बात कही गई। साथ ही साथ इनके द्वारा प्रतिभागियों में ज्ञान, कौशल एवं अनुभव के समावेशन के द्वारा उनमें सामर्थ्य के विकास पर बल दिया। इस सत्र में स्वागत वक्तव्य प्रो. के. के. सिंह , प्रभारी, दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं अध्यक्षीय उद्बोधन प्रो. चंद्रकांत रागीट, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा द्वारा दिया गया। कार्यशाला का परिचय डॉ. शिरीष पल सिंह, सह प्राध्यापक, शिक्षा विभाग एवं बी.एड. पाठ्यक्रम समन्वयक, दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा एवं धन्यवाद ज्ञापन डॉ. भरत कुमार पंडा, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग द्वारा किया गया। इस सत्र का संचालन डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डॉ. आर. पुष्पा नामदेव, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग द्वारा किया गया। कार्यशाला के सुचारु क्रियान्वयन हेतु प्रत्येक दिवस चार सत्रों में इसे आयोजित किया गया। इस कार्यशाला में कुल 21 सत्र, 27 विभिन्न विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालय के विषय विशेषज्ञ शामिल हुए।

कार्यशाला के प्रथम दिवस उद्घाटन सत्र के उपरांत द्वितीय सत्र में हमारे बीच विषय विशेषज्ञ प्रो. प्रेम नारायण सिंह, स्वामी सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श में अध्यापकों की भूमिका विषय पर  विस्तृत व्याख्यान प्रस्तुत किया गया।

तृतीय सत्र में डॉ. गौरव सिंह, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा कक्षा कक्ष शिक्षण हेतु सूचना एवं संचार प्रोध्योगिकी विषय पर विस्तृत चर्चा की गई सर के द्वारा सूचना एवं संचार प्रोध्योगिकी के उपयोग हेतु शिक्षकों में तत्परता के साथ साथ कक्षा कक्ष में आने वाली समस्याओं, डिजिटल एरा के विद्यार्थियों के साथ शिक्षकों का समन्वयन, डिजिटल संसाधनों की उपलब्धता, स्वयं प्लैटफ़ार्म के साथ सूचना एवं संचार प्रोध्योगिकी के उपयोग के हेतु चिंता एवं चुनौतियों पर विस्तृत चर्चा की गई। चतुर्थ सत्र में  डॉ. वैभव जाधव, सावित्री बाई फुले यूनिवरसिटि द्वारा शिक्षा में विभिन्न सूचना एवं संचार प्रोधौगिकी उपकरण के विषय में विस्तृत जानकारी प्रदान किया गया जिसमें विशेष रूप से गूगल क्लासरूम, गूगल फॉर्म, एडमोडो शामिल थे। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. धर्मेंद्र नारायण शंभरकर, डॉ. आर. पुष्पा नामदेव एवं श्री. समरजीत यादव द्वारा किया गया।

कार्यशाला के द्वितीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रोफेसर अमिता पाण्डे, लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा ई आकलन पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इसमें उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में ई आकलन की भूमिका एवं इसकी उपयोगिता के विषय में जानकारी दी। द्वितीय सत्र में शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श की प्रक्रिया विषय पर डॉ. सचिदानंद मूर्ति, राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि, तिरुपति द्वारा विशेष व्याख्यान दिया गया। इसमें उन्होंने शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श में अंतर स्पष्ट करते हुए यह बताने का प्रयास किया की किन अवसरों में निर्देशन की आवश्यकता होती है एवं कब परामर्श की आवश्यकता होती है। तृतीय सत्र में प्रो. उषा शर्मा , राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली द्वारा परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका पर विस्तृत चर्चा की गई। चतुर्थ सत्र में समायोजन हेतु निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता विषय पर डॉ. मदन कुमार झा, केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, पुरी परिसर द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. सुहासिनी बाजपेयी, डॉ.सारिका राय शर्मा, डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डॉ शिल्पी कुमारी द्वारा किया गया।

कार्यशाला के तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में ज्ञान एवं पाठ्यचर्या के अंतर्गत पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न आयामों, आधार, सोपानों एवं उद्देश्यों पर विस्तृत व्याख्यान प्रो. आशीष श्रीवास्तव, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय,

मोतीहारी द्वारा दिया गया। द्वितीय सत्र में डॉ. जितेंद्र रायगुरु, केंद्रीय संस्कृत वि.वि., भोपाल द्वारा भारतीय ज्ञान परंपरा पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। साथ ही तृतीय सत्र में डॉ. प्रवीण तिवारी, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड वि.वि., बरेली द्वारा ज्ञान का संप्रत्यय विषय पर विस्तृत व्यख्या एवं चर्चा की गई। चतुर्थ सत्र में डॉ. रेणु यादव द्वारा पर्यावरण शिक्षा के अंतर्गत सतत विकास एवं पर्यावरण शिक्षा पर व्याख्यान दिया गया। इसमें उनके द्वारा सतत विकास में पर्यावरण शिक्षा के योगदान पर विस्तृत चर्चा की गई। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापकों डॉ. भरत कुमार पंडा, डॉ.सारिका राय शर्मा, डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र एवं डॉ शिल्पी कुमारी द्वारा किया गया।

कार्यशाला के चतुर्थ दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. अंजुली सुहाने, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, नई दिल्ली द्वारा पर्यावरण शिक्षा: शिक्षण, अधिगम एवं आकलन विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। अपने व्याख्यान में इनके द्वारा पर्यावरण शिक्षा की विभिन्न शिक्षण पद्धति एवं पर्यावरण के प्रति विद्यार्थियों में संवेदनशीलता एवं जागरूकता के विषय पर विस्तृत चर्चा की गई। द्वितीय एवं तृतीय सत्र को दो समानान्तर सत्रों में संचालित किया गया। यह सत्र बी.एड. पाठ्यक्रम के ऐच्छिक विषय पर आधारित थे जिसमें द्वितीय सत्र में जेंडर, विद्यालय एवं समाज विषय पर डॉ. जितेंद्र पाटीदार द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इनके व्याख्यान का केंद्र में विद्यालय में जेंडर रहा। द्वितीय समानान्तर सत्र में प्रो. बच्चा भारती, केंद्रीय संस्कृत वि.वि. द्वारा मानव अधिकार एवं शांति शिक्षा के अंतर्गत भारतीय संस्कृति में मानव अधिकार विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। इनके द्वारा भारतीय संस्कृति में मानव अधिकार की संकल्पना एवं प्रकृति पर चर्चा की गई। तृतीय सत्र में जेंडर, विद्यालय एवं समाज विषय पर डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। तृतीय समानान्तर सत्र में प्रो. ललिता चंद्रात्रे, क.का.सं.वि.वि., रामटेक द्वारा मानव अधिकार एवं शांति विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया, जिसमें उनके द्वारा मानव अधिकार के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत चर्चा की गई। चतुर्थ सत्र में डॉ. शेफाली पाण्ड्या, मुंबई वि.वि. द्वारा उपलब्धि परीक्षण निर्माण पर व्याख्यान एवं गतिविधि आयोजित की गई । इनके सत्र में उपलब्धि परीक्षण की आवश्यकता, तत्व, ब्लू प्रिंट के साथ ब्लूम्स के शैक्षिक उद्देश्यों के वर्गीकरण पर भी विस्तृत चर्चा की गई। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. सुहासिनी बाजपेयी, डॉ. भरत कुमार पंडा, डॉ. आर.पुष्पा नामदेव एवं श्री. धर्मेंद्र शंभरकर द्वारा किया गया।

कार्यशाला के पंचम दिवस का प्रथम सत्र सूक्ष्म शिक्षण पर आधारित रहा। इसमें विषय विशेषज्ञ प्रो. नित्यानन्द पाण्डे, महात्मा ज्योतिबा फुले रूहेलखण्ड वि.वि., बरेली द्वारा सूक्ष्म शिक्षण के विभिन्न आयामों पर विस्तृत चर्चा की गई। द्वितीय सत्र में डॉ. रमेन्द्र पाढ़ी, ओड़ीसा केंद्रीय वि.वि., कोरापुट द्वारा पाठ योजना एवं उसके प्रकार पर विस्तृत

व्याख्यान एवं चर्चा की गई। तृतीय सत्र विषय शिक्षणशास्त्र पर आधारित था। अतः इस सत्र को तीन समानान्तर सत्रों में विभाजित किया गया। इन समानान्तर सत्रों में विद्यार्थियों को उनके विषय शिक्षण (भाषा, सामाजिक विज्ञान एवं विज्ञान व गणित ) के अनुरूप सत्र में शामिल किया गया। इन सत्रों में विषय आधारित पाठ योजना पर विस्तृत चर्चा की गई। सामाजिक विज्ञान के सत्र में डॉ. अश्विनी तंवर, मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू वि.वि., हैदराबाद एवं डॉ. आशीष रंजन, केंद्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली वि.वि.,दिल्ली द्वारा पाठ योजना, इसकी उपयोगिता, महत्व एवं संरचना पर विस्तृत चर्चा की गई। विज्ञान एवं गणित के सत्र में डॉ. सोनिया स्थापक, गुरु घासीदास वि.वि., बिलासपुर एवं डॉ. विशाखा शुक्ला, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी द्वारा विज्ञान पाठ योजना, इसकी उपयोगिता, महत्व एवं संरचना के साथ साथ विज्ञान शिक्षण के उद्देश्य, प्रकृति पर विस्तृत चर्चा की गई। भाषा के सत्र में डॉ. डंबरुधर पति, केंद्रीय संस्कृत वि.वि., भोपाल परिसर एवं डॉ. उज्वला सदाफल, स्वावलंबी शिक्षण संस्थान, वर्धा द्वारा पाठ योजना विकास एवं इसके क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा की गई। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. सारिका राय शर्मा, डॉ. भरत कुमार पंडा, डॉ. आर.पुष्पा नामदेव एवं श्री. धर्मेंद्र शंभरकर, श्री समरजीत यादव द्वारा किया गया।

कार्यशाला के छठें दिवस के प्रथम सत्र में डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी वि.वि. वर्धा द्वारा व्यक्तिवृत्त अध्ययन एवं इसकी उपयोगिता पर व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए विद्यालय के शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में सुधार हेतु इसके उपयोग की सार्थकता पर चर्चा की गई। द्वितीय सत्र में क्रियात्मक अनुसंधान पर डॉ. सौरभ कुमार, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , एनसीईआरटी, भोपाल, द्वारा व्याख्यान प्रस्तुत किया गया जिसमें इनके द्वारा क्रियात्मक अनुसंधान की विशेषता, उपयोगिता, संरचना एवं शिक्षकों द्वारा इसके उपयोग के विषय में विस्तृत चर्चा की गई।

सभी सत्रों के अंत में प्रतिभागियों को प्रश्न एवं चर्चा हेतु समय प्रदान किया गया जिससे वे विषय से संबन्धित सैद्धांतिक एवं प्रयोगिक समस्याओं का समाधान कर सके। इन सत्रों का समन्वयन शिक्षा विभाग के सहायक डॉ.आर. पुष्पा नामदेव एवं श्री. समरजीत यादव द्वारा किया गया। कार्यशाला के प्रत्येक सत्र में अधिकांश प्रतिभागियों ने अपनी उपस्थिती सुनिश्चित की। इस कार्यशाला में आयोजकों द्वारा यथोचित प्रयास किया गया कि प्रतिभागियों को इस पाठ्यक्रम से परिचित कराते हुए उन्हें इस आभासीय कार्यशाला के द्वारा प्रत्यक्ष अनुभव प्रदान करा सके।

**महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र**

**दूर शिक्षा निदेशालय**

# शिक्षा में स्नातक (बी.एड्) हेतु कार्यशाला

**(12- 17 अक्टूबर, 2020)**

**उद्घाटन सत्र**

दिनांक:12/10/2020

समय: 10:30-12:00 पूर्वाहन

| | |
|---|---|
| स्वागत वक्तव्य | प्रो. के. के. सिंह, प्रभारी, दूर शिक्षा निदेशालय. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| कार्यशाला परिचय | डॉ. शिरीष पाल सिंह, सह प्राध्यापक,शिक्षा विभाग एवं बी.एड्. पाठ्यक्रम समन्वयक, दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| मुख्य वक्ता | प्रो. के.पी. पाण्डे, पूर्व कुलपति महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, पूर्व निदेशक, अंतराष्ट्रीय दूर शिक्षा अधिगम केन्द्र, शिमला, हिमांचल प्रदेश एवं वर्तमान में निदेशक, सोसाइटी फॉर हायर एजुकेशन एंड प्रेक्टिकल एप्लिकेशन (शेपा), वाराणसी |
| अध्यक्षीय उदबोधन | प्रो. चंद्रकांत रगीट, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| धन्यवाद ज्ञापन | डॉ. भरत कुमार पंडा, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| संचालन | डॉ. आर. पुष्पा नामदेव, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा<br>डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र , सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |

| | दिनांक | प्रथम सत्र<br>(10.30 से 12 बजे तक) | द्वितीय सत्र<br>(12.00 से 1.30 बजे तक) | तृतीय सत्र<br>(2.00 से 3.30 बजे तक) | चतुर्थ सत्र<br>(3.30 से 5.00 बजे तक) |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | 12-10-2020 | | शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श<br>शैक्षिक निर्देशन व परामर्श: अध्यापक की भूमिका<br><br>प्रो. प्रेम नारायण सिंह<br>संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी<br>सत्र समन्वयक :श्री धर्मेन्द्र शंभरकर , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | शैक्षिक तकनीकी<br><br>कक्षा कक्ष शिक्षण हेतु सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी<br>डॉ. गौरव सिंह<br>इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्विद्यालय, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ. आर पुष्पा नामदेव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | शैक्षिक तकनीकी<br><br>शिक्षा में विभिन्न सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी उपकरणों का उपयोग<br>डॉ.वैभव जाधव<br>सावित्रीबाई फुले पुणे विश्विद्यालय, पुणे<br>सत्र समन्वयक :श्री समरजीत यादव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| 2. | 13-10-2020 | शैक्षिक तकनीकी<br><br>ई -आकलन<br>प्रो. अमिता पाण्डे<br>लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ.सुहासिनी वाजपेयी , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श<br><br>निर्देशन एवं परामर्श की प्रक्रिया<br>डॉ. सच्चिदानंद मूर्ती<br>राष्ट्रीय संस्कृत वि.वि,तिरुपती<br><br>सत्र समन्वयक : डॉ.सारिका राय शर्मा , सहायक प्रोफेसर, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श<br><br>एक परामर्शदाता के रूप में शिक्षक की भूमिका<br>प्रो. उषा शर्मा<br>राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ ऋषभ कुमार मिश्र , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श<br><br>समायोजन हेतु निर्देशन एवं परामर्श<br><br>डॉ. मदन कुमार झा<br>केंद्रीय संस्कृत वि.वि, पुरी परिसर<br>सत्र समन्वयक : डॉ.शिल्पी कुमारी , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |

<table>
<tr><td>3.</td><td>14-10-2020</td><td>ज्ञान और पाठ्यचर्या<br>पाठ्यक्रम विकास<br>प्रो. आशीष श्रीवास्तव<br>महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी<br>सत्र समन्वयक : डॉ ऋषभ कुमार मिश्र , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>ज्ञान और पाठ्यचर्या<br>भारतीय ज्ञान परंपरा<br>डॉ. जितेन्द्र रायगुरु<br>केंद्रीय संस्कृत वि.वि, भोपाल परिसर<br>सत्र समन्वयक : डॉ. भरत कुमार पंडा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>ज्ञान और पाठ्यचर्या<br>ज्ञान का संप्रत्यय<br>डॉ. प्रवीण तिवारी<br>महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली<br>सत्र समन्वयक : डॉ.शिल्पी कुमारी , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>पर्यावरण शिक्षा<br>सतत्त विकास एवं पर्यावरण शिक्षा<br>डॉ.रेणु यादव<br>हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़<br>सत्र समन्वयक : डॉ.सारिका राय शर्मा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td></tr>
<tr><td rowspan="2">4.</td><td rowspan="2">15-10-2020</td><td rowspan="2">पर्यावरण शिक्षा<br><br>पर्यावरण शिक्षा : शिक्षण अधिगम एवं आकलन<br>डॉ.अंजली सुहाने<br>इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्विद्यालय, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ.सुहासिनी वाजपेयी , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>जेंडर विद्यालय समाज<br>जितेन्द्र पाटीदार<br>राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ. भरत कुमार पंडा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>जेंडर विद्यालय समाज<br>डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर<br>म.गा.अ हि. वि, वर्धा<br>सत्र समन्वयक :श्री धर्मेन्द्र शंभरकर , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td rowspan="2">उपलब्धि परिक्षण निर्माण<br>प्रो.शेफाली पांड्या<br>मुंबई विश्वविद्यालय<br><br>सत्र समन्वयक : डॉ. आर पुष्पा नामदेव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td></tr>
<tr><td>मानवाधिकार वं शांति शिक्षा<br>भारतीय संस्कृति में मानवाधिकार<br>प्रो.बच्चा भारती<br>केंद्रीय संस्कृत वि.वि, त्रिपुरा परिसर,त्रिपुरा<br>सत्र समन्वयक : डॉ. भरत कुमार पंडा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td><td>मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा<br>प्रो ललिता चंद्रात्रे।<br>क.का.सं . वि.वि.,रामटेक<br>सत्र समन्वयक :श्री संजीव राज , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा</td></tr>
<tr><td rowspan="2">5.</td><td rowspan="2">16-10-2020</td><td rowspan="2">सूक्ष्म शिक्षण<br>प्रो. नित्यानंद पाण्डे</td><td rowspan="2">पाठ योजना स्वरुप, प्रकार<br>डॉ. रमेद्र पाढी<br><br>ओड़िसा केंद्रीय विश्वविद्यालय, कोरापूट</td><td colspan="2">पाठयोजना विकास</td></tr>
<tr><td>भाषा</td><td>डॉ. डम्बरुधर पति<br>केंद्रीय संस्कृत वि.वि, भोपाल परिसर<br>डॉ उज्वला सदाफल<br>स्वावलंबी शिक्षण संस्थान,वर्धा</td></tr>
</table>

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | | महात्मा ज्योतिबा फूले रुहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली<br>सत्र समन्वयक : डॉ.सारिका राय शर्मा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | सत्र समन्वयक :श्री धर्मेन्द्र शंभरकर , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | | सत्र समन्वयक : डॉ. भरत कुमार पंडा , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| | | | | सामाजिक विज्ञान | डॉ.अश्विनी तनवर<br>मौलाना आज़ाद राष्ट्रीय उर्दू विश्वविद्यालय, हैदराबाद<br>डॉ आशीष रंजन<br>केंद्रीय शिक्षा संस्थान ,दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>सत्र समन्वयक :श्री समरजीत यादव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| | | | | विज्ञान | डॉ सोनिया स्थापक<br>गुरु घासिदास केंद्रीय वि. वि, बिलासपुर<br>डॉ विशाखा शुक्ला<br>संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी<br><br>सत्र समन्वयक : डॉ. आर पुष्पा नामदेव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| | | | | गणित | प्रो. गजानन गुल्हाने<br>सत्र समन्वयक :श्री संजीव राज , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| 6. | 17-10-2020 | व्यक्तिवृत्त अध्ययन<br>डॉ. संदीप कुमार<br>केंद्रीय शिक्षा संस्थान<br>दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली<br>सत्र समन्वयक :श्री समरजीत यादव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | क्रियात्मक अनुसंधान<br>डॉ. सौरभ कुमार<br>क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान,भोपाल<br>राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, नई दिल्ली<br>सत्र समन्वयक : डॉ. आर पुष्पा नामदेव , सहायक प्रोफेसर , महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा | समारोप | |

# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

## दूर शिक्षा निदेशालय

## शिक्षा स्नातक (बी.एड़) हेतु कार्यशाला

**(12- 17 अक्टूबर, 2020)**

## सम्पूर्ति सत्र

दिनांक:17/10/2020

समय: 02:00-03:00 अपराहन

| | |
|---|---|
| **स्वागत वक्तव्य**<br>**02:00-02:05** | **प्रो. के. के. सिंह, प्रभारी, दूर शिक्षा निदेशालय. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा** |
| **कार्यशाला प्रतिवेदन**<br>**02:06-02:10** | डॉ. आर. पुष्पा नामदेव, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| **प्रतिभागियों की प्रतिपुष्टी**<br>**02:10-02:15** | डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र , सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| **सम्पूर्ति व्याख्यान**<br>**02:16-02:45** | प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल, माननीय कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| **अध्यक्षीय टिप्पणी**<br>**02:46-02:55** | प्रो. चंद्रकांत रागीट, प्रतिकुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| **धन्यवाद ज्ञापन**<br>**02:56-03.00** | डॉ.शिरीष पाल सिंह, सह प्राध्यापक,शिक्षा विभाग एवं बी.एड़. पाठ्यक्रम समन्वयक, दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |
| **संचालन** | डॉ.भरत कुमार पंडा, सहायक प्राध्यापक, शिक्षा विभाग, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा |

**बी.एड. पाठ्यक्रम (दूर शिक्षा)**

**कार्यशाला प्रतिवेदन (दिनांक 25-30 नवंबर 2019)**

बी.एड. पाठ्यक्रम (दूर शिक्षा) में सत्र 201 8-19एवं 2019-20 में पंजीकृत विद्यार्थियों हेतु NCTE के मानकों के अनुरूप 6 दिवसीय कार्यशाला का आयोजन दिनांक 25-30 नवंबर 2019 को किया गया। उक्त कार्यशालाओं के उद्घाटन एवं समापन कार्यक्रम में मा. कुलपति महोदय, मा.कुलसचिव महोदय, मा. वित्ताधिकारी महोदय, मा. अधिष्ठाता , शिक्षा विद्यापीठ एवं प्रभारी , दूर शिक्षा निदेशालय को आमंत्रित किया गया। उक्त 6 दिवसीय कार्यशाला के सुचारु आयोजन हेतु बी.एड. पाठ्यक्रम (दूर शिक्षा) के पाठ्यक्रम संयोजक डॉ. शिरीष पाल सिंह, डॉ. गुणवंत सोनोने (कार्यक्रम सह समन्वयक), डॉ. आदित्य चतुर्वेदी एवं श्री. ब्रम्हानंद मिश्र को सदस्य नामित किया गया। श्री. गुड्डू यादव (तकनीकी सहायक) एवं श्री. दिनु मिश्रा को कर्तव्यस्थ किया गया।

उक्त कार्यशाला में व्याख्यान हेतु विश्वविद्यालय केदूर शिक्षा निदेशालय, शिक्षा विभाग एवं अन्य विभागों के अध्यापकों को विशेषज्ञ के रुप में आमंत्रित किया गया।आधारभूत संगणक एवं ICTप्रशिक्षण हेतु लीला विभाग की संगणक प्रयोगशाला प्रतिभागियों के लिए उपलब्ध करायी गई। डॉ. हेमलता गोडबोले द्वारा कंप्यूटर की सामान्य जानकारीदी गई। कंप्यूटर सॉफ्टवेयर के शैक्षिक अनुप्रयोग के संदर्भ में डॉ. अंजनी राय ने विस्तारसे चर्चा की। श्री गिरीश पांडये द्वारा हिंदी की परिदृश्य से कंप्यूटर की उपयोगिता एवं महत्ता पर जानकारी प्रदान की गई। डॉ. अंजनी राय एवं श्री गिरीश पांडये ने प्रतिभागियों से कंप्यूटर सम्बंधित प्रायोगिक कार्य करवाएं।

डॉ. गुणवंत सोनोने ने शिक्षा तकनीकी की वर्तमान प्रासंगिकता पर अपने विचार रखे ।सूक्ष्म पाठयोजना का निर्माणकिस प्रकारसे किया जाता है, इस संदर्भ में सोदाहरण वक्तव्य डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने दिया ।प्रकरण अध्ययनकी विद्यालयीन जीवन में महत्ता के संदर्भ में विस्तारपूर्वक जानकारी डॉ. गुणवंत सोनोने द्वारा दी गई ।पाठयोजना निर्माणएवं क्रियान्वयन की यथोचित जानकारी श्री. ब्रम्हा नंद मिश्र द्वारा दी गई ।क्रियात्मक अनुसंधान का व्यावहारिक एवं क्रियात्मक पक्ष डॉ. गुणवंत सोनोने द्वारा रखा गया । उपलब्धि परीक्षण का विद्यालयीन जीवन की सफलता में योगदान पर डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने महत्वपूर्ण विचार रखे।

शैक्षिक निर्देशन एवं परामर्श की आवश्यकता एवं महत्व पर समग्र विचार श्री. ब्रम्हा नंद मिश्र द्वारा रखे गए ।ज्ञान एवं पाठ्यचर्या की वर्तमान प्रासंगिकता पर डॉ. आदित्यचतुर्वेदी ने जानकारी प्रदान की ।जेंडर, विद्यालय और समाज का पारस्पारिक संबंध डॉ. गुणवंत सोनोनेने स्पष्ट किया ।पर्यावरण शिक्षा पर विशेष व्याख्यान डॉ. आदित्य चतुर्वेदी ने दिया ।मानवाधिकार एवं शांति शिक्षा की शिक्षक शिक्षा में उपयोगिता पर अपने विचार श्री. ब्रम्हा नंद मिश्र ने रखे।

प्रायोगिक कार्य के रूप में सूक्ष्म पाठयोजना का अभ्यास डॉ. आदित्य चतुर्वेदी के पर्यवेक्षण में किया गया ।पाठयोजना निर्माण के प्रायोगिक कार्य का अभ्यास श्री. ब्रम्हा नंद मिश्र के पर्यवेक्षण में किया गया। प्रकरण अध्ययन एवं क्रियात्मक अनुसंधान के प्रायोगिक कार्य का अभ्यास डॉ. गुणवंत सोनोने के पर्यवेक्षण में किया गया । समुदाय के साथ अंत :क्रिया, मनोविज्ञान प्रयोगात्मक ,विद्यालय

अभिलेखों का विवरण ,आदि की सैद्धांतिक एवं प्रायोगिक जानकारी विद्यार्थियों को दी गई । उक्त प्रायोगिक कार्य प्रतिभागियों के द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। शिक्षा से जुड़े समसामयिक विषयों पर विभिन्न शिक्षकों ने अपने प्रासंगिक विचार रखे ।

उक्त कार्यशाला प्रतिभागियों के लिए ज्ञानवर्धक एवं कौशलवर्धक सिद्ध हुई। एक शिक्षक को शैक्षिक रूपसे अद्यतन रहने हेतु यह कार्यशाला के विशेष व्याख्यान एवं प्रायोगिक कार्य आधारशिला के रूप में योगदान देगी। इस कार्यशाला की विशेषताओं में चर्चा , विमर्श, क्रियाशीलता, विचारमंथन आदि विशेष उल्लेखनीय है। कार्यशाला की सफलता का मापन एवं परिक्षण करने हेतु प्रतिभागियों से प्रतिपुष्टि की गई। इस कार्यशाला को सफल बनाने में कार्यक्रम समिति के सभी सदस्यों का सहयोग रहा।

ज्ञान शांति मैत्री

आज़ादी का अमृत महोत्सव

# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्या

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वा

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of

नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त Accredited with 'A' Grade by NAA

## बी.एड. (दूर शिक्षा) के पंजीकृत विद्यार्थियों हेतु कार्यशाला
## (18 अप्रैल से 23 अप्रैल 2022)
## (भाषा, विषय-अवबोधन एवं समावेशी शिक्षा)

**कार्यशाला समन्वयक:** डॉ ऋषभ कुमार मिश्र, डॉ आर. पुष्पा नामदेव और डॉ सारिका राय शर्मा

| तिथि | समय | विषय | विषय विशेषज्ञ | सत्र संचालन |
|---|---|---|---|---|
| 18 अप्रैल 2022 | प्रात: 10:30-11:50 | **उद्घाटन सत्र** | अध्यक्षता: प्रो हनुमान प्रसाद शुक्ल, माननीय प्रति कुलपति | डॉ आर. पुष्पा. नामदेव |
| | अपराह्न 12:00 - 1:00 | ज्ञान निर्माण, शिक्षण एवं विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम | प्रो शिरीष पाल सिंह | डॉ सारिका राय शर्मा |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | भारत की बहुभाषिकता और शिक्षा से संबधित नीतिगत संस्तुतियाँ | डॉ योगेन्द्र बाबू | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | भाषा अधिगम के सिद्धांत: मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम | डॉ भरत कुमार पंडा | डॉ सारिका राय शर्मा |
| 19 अप्रैल 2022 | प्रात: 11:00-12:00 | भाषा, संप्रेषण और शिक्षण: पाठ्यचर्यापर्यंत भाषा के संदर्भ में | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र | ------------------ |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | भाषा के कौशल-1 : श्रवण और भाषण | डॉ गौरी शर्मा | डॉ आर. पुष्पा नामदेव |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | भाषा के कौशल-2 : पठन और लेखन | डॉ सीमा बरगट | डॉ सारिका राय शर्मा |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | ज्ञानानुशासन: संगठन, प्रकार एवं परिप्रेक्ष्य | डॉ चन्द्र शेखर पांडे | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |
| 20 अप्रैल 2022 | प्रात: 11:00-12:00 | विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर ज्ञानानुशासन | डॉ शिल्पी कुमारी | डॉ आर. पुष्पा नामदेव |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | विज्ञान : प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ सारिका राय शर्मा | -------------------- |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | गणित : प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ हरीश पांडे | डॉ आदित्य चतुर्वेदी |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | सामाजिक विज्ञान: प्रकृति, प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र | डॉ गुणवंत सोनोने |
| 21 अप्रैल 2022 | प्रात:11:00-12:00 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ-I | श्री अखिलेश यादव | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ – II | डॉ आदित्य चतुर्वेदी | |



12-12-022

| | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | अपराह्न 3:00-4:00 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में कला- एकीकृत अधिगम | डॉ राम अवध | डॉ आदित्य चतुर्वेदी |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में खेल- एकीकृत अधिगम | श्री अनिकेत आंबेकर | डॉ गुणवंत सोनोने |
| 22 अप्रैल 2022 | प्रात: 11:00-12:00 | समावेशी शिक्षा I : अवधारणा, औचित्य एवं विभिन्न उपागम | डॉ आर. पुष्पा नामदेव | ------------------ |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा II : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य, नीतियाँ एवं कार्यक्रम | डॉ गुणवंत सोनोने | ------------------ |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | दिव्यांगता I: शारीरिक रूप से विकलांग, श्रवण क्षतियुक्त, दृष्टि अक्षम बालक | डॉ सुहासिनी वाजपेयी | डॉ आर. पुष्पा नामदेव |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | दिव्यांगता II: बहुल विकलांग, वाक-दोष, भाषा विकास ग्रस्त बालक | डॉ हेमचन्द्र ससाने | डॉ गुणवंत सोनोने |
| 23 अप्रैल 2022 | प्रात: 11:00-12:00 | समावेशन के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम और बहुसांस्कृतिक शिक्षा | श्री धीरज मसराम | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं शिक्षण युक्तियाँ | डॉ प्रमोद जोशी | डॉ आदित्य चतुर्वेदी |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या | डॉ नरेंद्र पाल | डॉ गुणवंत सोनोने |
| | अपराह्न 4:15-5:25 | संपूर्ति सत्र | अध्यक्षता: प्रो मनोज कुमार, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ | डॉ सारिका राय शर्मा |

12/4/2022
**पाठ्यक्रम समन्वयक**

K. Bala 12/04/2
**निदेशक, दूर शिक्षा**

# बी.एड. (दूर शिक्षा) के पंजीकृत विद्यार्थियों हेतु आयोजित कार्यशाला

## (भाषा, विषय-अवबोधन एवं समावेशी शिक्षा)

बी.एड. (दूर शिक्षा) अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत सत्र जुलाई 2021 (संशोधित नवम्बर-दिसंबर 2021) सत्र में पंजीकृत विद्यार्थियों के लिए **'भाषा, विषय-अवबोधन एवं समावेशी शिक्षा'**विषय पर छह दिवसीय कार्यशाला का आयोजन 18 अप्रैल से 23 अप्रैल 2022 तक किया गया। इस कार्यशाला के**उद्देश्य थे-**

- शिक्षण और अधिगम की प्रक्रिया में भाषा की भूमिका से परिचित हो सकेंगे।
- पाठ्यचर्या एवं भाषा के पारस्परिक संबंध पर मनन कर सकेंगे।
- विद्यालयी शिक्षा में भारतीय भाषाओं की प्रासंगिकता से परिचित हो सकेंगे।
- भाषा की दृष्टि से कक्षा शिक्षण को समावेशी एवं गुणवत्तापरक बनाने में समर्थ होंगे।
- विद्यालयी स्तर पर ज्ञानानुशासनों की संरचना, संगठन और अन्तःसंबंध पर विचार कर सकेंगे।
- समावेशी शिक्षा की अवधारणा और तद्रूप कक्षा में विद्यार्थियों की विविधता की सराहना कर सकेंगे।
- विद्यार्थियों की विविधता को संबोधित करने वाली शिक्षण युक्तियों से परिचित हो सकेंगे।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संस्तुतियों के अनुरूप शिक्षार्थी केन्द्रित शिक्षण की परिकल्पना को समझ सकेंगे।
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संस्तुतियों को क्रियान्वित करने में अध्यापक की भूमिका पर विचार कर सकेंगे।

उपर्युक्त **उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निम्नानुसार सत्र आयोजन किए गए-**

## क्रियान्वित सत्र एवं विषय विशेषज्ञों की सूची

| **तिथि** | **समय** | **विषय** | **विषय विशेषज्ञ** |
|---|---|---|---|
| **18 अप्रैल 2022** | **प्रातः 10:30- 11:50** | **उद्घाटन सत्र** | अध्यक्षता: प्रो .हनुमान प्रसाद शुक्ल, माननीय प्रति कुलपति |
| | अपराह्न 12:00 -1:00 | ज्ञान निर्माण, शिक्षण एवं विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम | प्रो. शिरीष पाल सिंह |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | भारत की बहुभाषिकता और शिक्षा से संबधित नीतिगत संस्तुतियाँ | डॉ. योगेन्द्र बाबू |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | भाषा अधिगम के सिद्धांत : मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम | डॉ. भरत कुमार पंडा |
| **19 अप्रैल 2022** | **प्रातः** 11:00-12:00 | भाषा, संप्रेषण और शिक्षण : पाठ्यचर्यापर्यंत भाषा के संदर्भ में | डॉ. ऋषभ कुमार मिश्र |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | भाषा के कौशल-1 : श्रवण और भाषण | डॉ. गौरी शर्मा |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | भाषा के कौशल-2 : पठन और लेखन | डॉ. सीमा बरगट |
| | अपराह्न 4:15 - 5:15 | ज्ञानानुशासन: संगठन, प्रकार एवं परिप्रेक्ष्य | डॉ. चन्द्र शेखर पांडे |

| | | | |
|---|---|---|---|
| **20 अप्रैल 2022** | **प्रातः** 11:00-12:00 | विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर ज्ञानानुशासन | डॉ. शिल्पी कुमारी |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | विज्ञान : प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ. सारिका राय शर्मा |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | गणित : प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ. हरीश पांडे |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | सामाजिक विज्ञान: प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ.ऋषभ कुमार मिश्र |
| **21 अप्रैल 2022** | **प्रातः** 11:00-12:00 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ-I | श्री. अखिलेश यादव |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ –II | डॉ. आदित्य चतुर्वेदी |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में कला- एकीकृत अधिगम | डॉ. राम अवध |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में खेल- एकीकृत अधिगम | श्री. अनिकेत आंबेकर |
| **22 अप्रैल 2022** | **प्रातः** 11:00-12:00 | समावेशी शिक्षा I : अवधारणा, औचित्य एवं विभिन्न उपागम | डॉ. आर. पुष्पा नामदेव |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा II : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य , नीतियाँ एवं कार्यक्रम | डॉ. गुणवंत सोनोने |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | दिव्यांगता I: शारीरिक रूप से विकलांग , श्रवण क्षतियुक्त, दृष्टि अक्षम बालक | डॉ. सुहासिनी वाजपेयी |
| | अपराह्न 4:15-5:15 | दिव्यांगता II: बहुल विकलांग , वाक-दोष, भाषा विकास ग्रस्त बालक | डॉ. हेमचन्द्र ससाने |
| **23 अप्रैल 2022** | **प्रातः** 11:00-12:00 | समावेशन के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम और बहुसांस्कृतिक शिक्षा | श्री. धीरज मसराम |
| | अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं शिक्षण युक्तियाँ | डॉ. प्रमोद जोशी |
| | अपराह्न 3:00-4:00 | समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या | डॉ. नरेंद्र पाल |
| | अपराह्न 4:15-5:25 | संपूर्ति सत्र | अध्यक्षता: प्रो .मनोज कुमार , अधिष्ठाता , मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ |

| 18 अप्रैल 2022 , प्रातः 10:30- 11:50 | **उद्‌घाटन** सत्र | **अध्यक्षता: प्रो हनुमान प्रसाद शुक्ल, माननीय प्रति कुलपति**<br>**विशेष उपस्थिति: डॉ के. बालराजु, निदेशक दूर शिक्षा** |
|---|---|---|

दूर शिक्षा निदेशालय , महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय द्वारा सेवारत अध्यापकों के लिए एक सप्ताह की ऑनलाइन कार्यशाला का आयोजन किया गया। 18 अप्रैल 2022 को प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल, प्रति कुलपति , महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने इस कार्यशाला का उद्घाटन किया। कार्यशाला का शुभारंभ मंगलाचरण और विश्वविद्यालय के कुलगीत से हुआ। कार्यशाला के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए डॉ.ऋषभ कुमार मिश्र ने भाषा और शि क्षा के संबंध की चर्चा की। इन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में बताया कि यह कार्यशाला भाषा , विभिन्न विद्यालयी विषयों की प्रकृति और विद्यार्थियों की विविधता से जुड़े विषयों पर चर्चा के लिए प्रस्तावित है। इसके बाद दूर शिक्षा निदेशालय के निदेशक डॉ. के. बालराजु ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की संस्तुतियों पर चर्चा की। इन्होंने बल दिया कि हमें गुणवत्ता और समावेशन पर बल देने वाली शिक्षण पद्धतियों का प्रयोग करना चाहिए। इसके लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 पर्याप्त अवसर देती है। विद्यालयी शिक्षा का लक्ष्य शिक्षकों के सहयोग के बिना साकार नहीं हो सकता है। इसके लिए सेवारत अध्यापकों को इस नीति के मूल तत्वों को गहनतापूर्वक समझना आवश्यक है। तदुपरांत प्रो. हनुमान प्रसाद शुक्ल , प्रति कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय ने अध्यक्षीय उद्बोधन दिया। इन्होंने अपने वक्तव्य में बल दिया कि शिक्षा एक प्रायोजित गतिविधि है जो भाषा में संपन्न होती है। शिक्षा भाषा में ही दी जाती है। भाषा ज्ञान को आकार देने का कार्य करती है। ऐसा संभव नहीं है कि ज्ञान कोई विकसित करे और भाषा कोई और विकसित करे। भाषा व्यक्ति और समुदाय से पृथक अस्तित्व नहीं रखती है। भाषा कल्पवृक्ष है जो हमारी सांस्कृतिक विरासत की वाहक होती है। इन्होंने प्रतिभागियों को सचेत किया कि सूचना एवं तथ्य शिक्षण नहीं है जब तक वह अवबोधन का हिस्सा ना बने। किसी भी भाषा में जितनी संपन्नता होगी उतनी ही

सम्पन्न क्रियाएँ होंगी। भाषा और ज्ञान दोनों के बीच में जैविक संबंध है एवं उसका विच्छेदन संभव नहीं है। इन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 का संदर्भ लेते हुए कहा कि यह नीति भाषा शिक्षकों की कमी एवं दक्ष भाषा शिक्षकों की अनुपलब्धता की समस्या के समाधान को अच्छी शिक्षा के लिए अपरिहार्य मानती है।

इस कार्यशाला के उद्घाटन सत्र का संचालन डॉ. आर. पुष्पा नामदेव ने किया। उद्घाटन सत्र के अंत में डॉ. सारिका राय शर्मा द्वारा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस कार्यशाला में दूर शिक्षा निदेशालय के अतिथि अध्यापक डॉ. आदित्य चतुर्वेदी और डॉ . गुणवंत सोनाने उपस्थित थे। इस कार्यशाला में दूर शिक्षा निदेशालय के बी.एड. (दूर शिक्षा) पाठ्यक्रम में पंजीकृत विद्यार्थी सहभागिता कर रहे थे।

| | | |
|---|---|---|
| **18 अप्रैल 2022,**अपराह्न 12:00 - 1:00 | ज्ञान निर्माण, शिक्षण एवं विद्यार्थी केन्द्रित अधिगम | प्रो. शिरीष पाल सिंह |

प्रो. शिरीष पाल सिंह ने ज्ञान निर्माण, शिक्षण एवं विद्यार्थी केंद्रित अधिगमको स्पष्ट करते हुए कहा कि, सूचना ज्ञान का प्रमुख स्त्रोत है । उन्होंने ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया के विभिन्न घटकों के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की । कक्षाओं में सूचनाओं की प्रस्तुति शिक्षक केंद्रित न होकर विद्यार्थीकेंद्रित होनी चाहिए, जिससे सूचनाओं का लाभ विद्यार्थियों को प्राप्त हो। ज्ञाननिर्माण की प्रक्रिया में सूचनाओं की भूमिका महत्वपूर्ण होती है । ज्ञान निर्माण के विभिन्न उपागमों को विभिन्न उदाहरणों की सहायता से स्पष्ट किया। ज्ञान के निर्माण में शिक्षण एवं शिक्षक की भूमिका की विस्तार से चर्चा की। ज्ञान निर्माण में विद्यार्थी केंद्रितअधिगम आवश्यक होता है । ज्ञान निर्माण में विद्यालय, परिवार, समूह साथीऔर समाज आदि की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। शिक्षक, अभिभावक के द्वारा शिक्षार्थियों के ज्ञाननिर्माण के लिए पोषक वातावरण का निर्माण करना चाहिए।

| | | |
|---|---|---|
| **18 अप्रैल 2022,**अपराह्न 3:00-4:00 | भारत की बहुभाषिकता और शिक्षा से संबधित नीतिगत संस्तुतियाँ | डॉ. योगेन्द्र बाबू |

डॉ.योगेन्द्र बाबू ने बहुभाषिकता पर अपने विचार व्यक्त करते हुये कहा कि हम बहुभाषिक किसे कहेगें ?कोई व्यक्ति यदि एक से अधिक भाषा बोल ,पढ़ एवं लिख सकता है तो उससे हम बहुभाषिकता कह सकते है। बहुभाषिकता आज हमारे लिए चुनौती भी है और अवसर भी। त्रिभाषा सूत्र के साथ ही बहुभाषिकता का विचार प्रारम्भ हुआ। भारत जैसे बहुभाषिक देश में बहुभाषी होना आज की आवश्यकता है। एक शिक्षक को बहुभाषी होना आवश्यक है। कक्षा में कोई विद्यार्थी यदि अपनी भाषा में प्रश्न करता हैया उत्तर देता है तो उसे समझने का प्रयास करना चाहिए।एक अध्ययन से मालूम पड़ा है कि बच्चों को उनकी भाषा में पढ़ाने पर अच्छे परिणाम प्राप्त होते हैं। बहुभाषिकता दो प्रकार की होती है। पहली योगात्मक बहुभाषिकता,जिसमें कोई व्यक्ति अपनी भाषा के साथ साथ दूसरी भाषा की भी सीखता है। दूसरी ऋणात्मक बहुभाषिकता, इसमें दूसरी भाषा सीखने पर अपनी मातृभाषा को धीरे-धीरे भूल जाते है। संविधान की 8 वीं अनुसूची में 22 भाषाओं को रखा गया है। जनगणना के आँकड़ों के आधार पर बोलियों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में मातृभाषा एवं बहुभाषिकता बढ़ावा देने के लिए प्रावधान है। मातृभाषा में शिक्षण से कल्पना शक्ति,सम्प्रेषण एवं सृजनात्मकता का विकास होता है। विद्यार्थियों के ऊपर हम किसी भाषा को थोप नहीं सकते।

| | | |
|---|---|---|
| **18 अप्रैल 2022,**अपराह्न 4:15-5:15 | भाषा अधिगम के सिद्धांत : मातृभाषा अधिगम और द्वितीय भाषा अधिगम | डॉ. भरत कुमार पंडा |

डॉ.भरत कुमार पंडा ने कहा कि भाषयेत इति भाषा। भाषा जिसके माध्यम से हम अपने भाव को व्यक्त करते है। किसी भाषा का ज्ञान पढ़ ,लिख, बोल एवं सुनकर प्राप्त करते है। हर एक भाषा की एक ध्वनि व्यवस्था होती है। इस ध्वनि व्यवस्था ज्ञान एवं शब्दों का अर्थ ज्ञान ही भाषा का ज्ञान है। प्रत्येक भाषा की अपनी अभिसंरचना होती है। घर पर हम मातृभाषा सीखते है। मातृभाषा को हम अनुकरण करके सीखते है। मातृभाषा सीखने के लिए हम पहले उसकी

व्याकरण नहीं पढ़ते। द्वितीय भाषा हम औचारिक रूप से सीखते है। इसे विद्यालय या किसी संस्था में रहकर सीखा जाता है। त्रिभाषा सूत्र में मातृभाषा के साथ एक क्षेत्रीय भाषा और तीसरी भाषा में अंग्रेजी सीखते है।यदि हम किसी भाषा की ध्वनि नहीं पहचानते है तो हमारे दिमाग में किसी के बोलने से कोई चित्र नहीं बनता। जिस समाज में हम रहते है उसमें बोली जाने वाली भाषा भी हम अनायास ही सीख लेते है।यदि कभी- कभी हम रोजगार के लिये भी कोई भाषा सीखते है।भाषा सीखने में अधिगम कर्ता की रूचि ,आयु ,अभ्यासआदि का प्रभाव पढ़ता है।भाषा के सीखने के कई सिद्धांत होते है। इन सिद्धांतों के आधार पर हम भाषा सीखते है। भाषा सीखने के लिए हमे वह भाषा बोलना,पढ़ना,लिखना एवं सुनना आना चाहिए।

| | | |
|---|---|---|
| **19 अप्रैल 2022, प्रात:**11:00-12:00 | भाषा, संप्रेषण और शिक्षण : पाठ्यचर्यापर्यंत भाषा के संदर्भ में | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |

इस सत्र में ऋषभ कुमार मिश्र द्वारा समग्र भाषा उपागम की चर्चा करते हुए व्याख्या की गई है कि विद्यालय स्तर पर प्रत्येक विषय को सीखने में भाषा की भूमिका होती है। इसे ध्यान में रखते हुए पाठ्यचर्यापर्यन्त भाषा उपागम का विकास हुआ है। इसके अंतर्गत विज्ञान , गणित और सामाजिक विज्ञान शिक्षण के लिए भाषा कौशलों के महत्व पर विचार किया जाता है। इस उपागम के अंतर्गत बल दिया जाता है कि अध्यापक बच्चे की भाषा और अनुभवों को संज्ञान में लेते हुए कक्षा को संवादपरक बनाएं। इन्होंने इस सत्र में कक्षा को संवादपरक बनाने की युक्तियों पर भी चर्चा की।

| | | |
|---|---|---|
| **19 अप्रैल 2022,** अपराह्न 12:15-1:15 | भाषा के कौशल-1 : श्रवण और भाषण | डॉ. गौरी शर्मा |

डॉ. गौरी शर्मा ने अपने व्याख्यान में भाषा के कौशल :श्रवण और भाषण के संदर्भ मे विस्तार से चर्चा की ।उन्होंने कहा कि भाषा मानव के अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन एवं माध्यम है। ध्वनियों की महत्ता भी भाषा कौशल के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। उन्होंने कहा कि सभी कौशल का आधार श्रवण कौशल है। श्रवण एवं भाषण कौशल का महत्व, उपयोगिता, शिक्षण विधियाँ आदि के संदर्भ में विस्तार से विवेचना की। श्रवण एवं भाषण कौशल के विकास में आनेवाली समस्याएँ एवं उपायों पर चर्चा की। मौखिक अभिव्यक्ति की विशेषताओं का वर्णन किया। विद्यार्थियों के भाषिक विकास के लिए शिक्षण सूत्रों का उचित उपयोग करना आवश्यक है। भाषिक विकास के लिए सरल से कठिन

की ओर, मूर्त से अमूर्त की ओर, ज्ञात से अज्ञात की ओर आदि शिक्षण सूत्रों का उपयोग करना चाहिए।शिक्षक के द्वारा भाषिक विकास के लिए किए जाने वाले प्रयासों में आवश्यक सावधानियां बरतने की बात की। भाषिक विकास के लिए आयोजित की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों के संदर्भ में भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी।

| | | |
|---|---|---|
| **19 अप्रैल 2022,** अपराह्न3:00-4:00 | भाषा के कौशल-2 : पठन और लेखन | डॉ. सीमा बरगट |

डॉ. सीमा बर्गट ने अपना वक्तव्य के आरंभ में चाणक्य के एक कथन का उल्लेख किया। "शिक्षक साधारण नहीं होता,प्रलय एवं सृजन उसकी गोद में खेलते है।" भाषा सीखने के लिए श्रवण , भाषण,पठन एवं लेखन कौशल का विकास जरूरी होता है।शुरूआत में बालक वर्णो को पहचान कर उन्हें मिलकर उच्चारण करने का प्रयास करता है फिर बालक अपनी जिज्ञासा और ज्ञान-पिपासा को शांत करने हेतु पुस्तकें पढ़ने के लिए पुस्तकालय जाता है। पठन कौशल को किताब पढ़ाकर,श्याम पट्ट पर पढ़ने का अभ्यास कराके,सस्वर वाचन,मौन पाठन, अनुकरण वाचन, डिजिटल पाठन एवं कठिन शब्दों का उच्चारण कराके विकसित कर सकते है। दृष्टि दोष , श्रवण दोष एवं मानसिक रूप से कमजोर विद्यार्थियों का पठन कौशल विकसित करने के लिए कुछ अलग विधियों का प्रयोग करना पड़ेगा। लेखन कौशल विकसित करने के लिए छोटे बच्चों को चार लाइन वाली कॉपी में लिखना चाहिए। सुलेख लेखन,श्रुत लेखन के द्वारा लेखन कौशल को विकसित किया जा सकता है। लिखित गृहकार्य ,किसी घटना पर अपने विचार लिखा कर , किसी विषय पर निबंध लिखा कर भी लेखन कौशल का विकास किया जा सकता है।

| | | |
|---|---|---|
| **19 अप्रैल 2022,** अपराह्न 4:15-5:15 | ज्ञानानुशासन: संगठन, प्रकार एवं परिप्रेक्ष्य | डॉ. चन्द्र शेखर पांडे |

ज्ञानानुशासन अध्ययन की एक विधा है जिसकी अपनी विधि, पद्धति मानक शब्दावली,विद्वानों का सुपरिभाषित समूह होता है। ज्ञानानुशासन एवं विषय में अंतर होता है। विद्यालय स्तर पर जिसे हम विषय कहते हैं, उच्च शिक्षा में उसे ज्ञानानुशासन कहते है। विषय अंतरानुशासनिक होता है। ज्ञानानुशासन का विकास अरस्तू ने किया। अरस्तू ने ज्ञानानुशासन के 6 प्रकार बताए तर्क ,प्रकृति विज्ञान , तत्व मीमांसा , जीव विज्ञान ,भौतिक विज्ञान एवं शासन एवं

काव्यशास्त्र। रोमन साम्राज्य ने 7 ज्ञानानुशासनमुख्य रूप से बताये जिसमें वाकपटुता , व्याकरण , द्वंदवाद , अंकगणित,ज्यामिति,खगोल विद्या,गणित आदि थे। 4 वीं सदी से13 वीं तक इनको ईसाई धर्म के आधार पर ढालने की कोशिश की गई।16 वीं शताब्दी में वैज्ञानिक क्रांति के समय रसायन,वनस्पति शास्त्र का जन्म हुआ,इस समय ज्ञान एवं सूचना का भंडारण मुश्किल हुआ। वर्तमान में ज्ञानानुशासन एक प्रकार के विचारों , सिद्धांतों , मॉडलों ,मूल्यों और वैज्ञानिक समुदाय की अभिवृतियों का एक समुच्चय है। बाद में ज्ञान को तर्क के आधार पर कसौटी कसा गया। तर्क एवं अनुभव के आधार पर ज्ञान का निर्माण किया गया। विज्ञान एक अनुशासन के रूप में कैसे विकसित हुआ। खगोल विज्ञान में पहले पृथ्वी केन्द्रित विचार था बाद में या सूर्य केन्द्रित हो गया।इस प्रकार विभिन्न अनुशासनों का विकास हुआ।

| | | |
|---|---|---|
| **20 अप्रैल 2022, प्रातः** 11:00-12:00 | विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर ज्ञानानुशासन | डॉ. शिल्पी कुमारी |

किसी विषय को समझने के प्रयास से ज्ञान का सृजन होता है। ज्ञान निर्माण की प्रक्रिया यह अनुशासन की व्यवस्था है। जॉन वाल्टन के विचारों को उक्त के संदर्भ विस्तार पूर्वक बताया गया। अंतरानुशासन से अनुशासन की ओर हम बढ़ते जाते है। माध्यमिक स्तर पर हम विषय ज्ञान से जानते है और उच्चतर शिक्षा में हम ज्ञानानुशासन (dicipline) के रुप में जानते है। उन्होंने कहा कि, किसी कक्षा में पढ़ाना है तो पूर्व में विषय की पृष्ठभूमि, बच्चो की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान रखना चाहिए। भाषा, विज्ञान, सामजिक विज्ञान आदि विषयों का ज्ञानानुशासन स्वतंत्र भी है एव एकसंघ भी होता है। विद्यार्थियों को अंतरअनुशासनिक दृष्टि से चिंतन में समर्थ बनाना आवश्यक है। प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थी अंतरअनुशासक बनते है जैसे- परिसर अभ्यास में विज्ञान, सामजिक विज्ञान विषय को पढ़ते है। प्राथमिक स्तर से उच्च शिक्षा के स्तर तक पहुचते है तो हम ज्ञानानुशासन के करीब होते है।

| | | |
|---|---|---|
| **20 अप्रैल 2022,** अपराह्न 12:15-1:15 | विज्ञान: प्रकृति, प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ. सारिका राय शर्मा |

डॉ. सारिका राय शर्मा ने विज्ञान की प्रकृ ति, प्रविधि एवं अंतरानुशास निकता पर व्याख्यान दिया। विज्ञान की प्रकृ ति वस्तुनिष्ठ, सत्यापनशील एवं गतिशील होती है। यह संशयवाद को प्रोत्साहित कर वैज्ञानिकों को दृढ संकल्प एवं निरंतर कठोर परिश्रम के लिए अभिप्रेरीत करता है । वैज्ञानिक प्रविधि की विशेषताओं के अंतर्गत निश्चयात्मकता, सत्यापनशीलता, भविष्य कथन करने कि क्षमता तथा सार्वभौमिकता स म्मिलित है। वैज्ञानिक प्रविधि के चरण के अंतर्गत समस्या का निर्धारण, तथ्यों का संकलन, परिकल्पना निर्माण, परिकल्पना कीजाँच तथा सिद्धांत निर्माण साम्मिलित है। विज्ञान एक अंतरानुशासनिक क्षेत्र है, जो विभिन्न संप्रत्ययो का बोध संपूर्णता में विकसित करने हेतू विभिन्न ज्ञानाशासनों से संप्रत्ययो, प्रविधियों एवं अवधारणाओं को एकीकृत उपागम से उपयोग करता है

| | | |
|---|---|---|
| **20 अप्रैल 2022,** अपराह्न 3:00-4:00 | गणित: प्रकृति, प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ. हरीश पांडे |

डॉ.हरीश पांडे ने बताया कि गणित की अपनी एक अलग भाषाहै। इसमे में पद, संकल्पनाएँ, सूत्र,संकेत,सिद्धांत,प्रक्रियाएँ आदि होती है। गणित की विषय वस्तु में क्रमबद्धता तथा व्यवस्था है। गणित सिखाने के लिए निश्चित क्रमद्धता को आधार बनाया जाता है। गणित का महत्वपूर्ण आधार शुद्धता है। अन्य विषय जहाँ न्यूनतम विचलन को स्वीकार भी लेते है, वहीं गणित इस प्रकार की स्वीकृति हेतु किसी भी स्थिति में तैयार नहीं होता हैं। गणित में सामान्यीकरण, आगमन, निगमन, अमूर्तन आदि मानसिक क्रियाओं की सहायता से सिद्धांतों, प्रक्रियाओं, सूत्रों आदि को गणितीय भाषा में प्रकट किया जाता हैं। गणित शिक्षण में कई शिक्षण विधियों का प्रयोग किया जाता है। इसमें आगमन,निगमन,विश्लेषण विधि, संश्लेषण विधि एवं परियोजना विधि मुख्यरूप से उपयोग में लायी जाती है। गणित का सभी विषयों के साथ गहरा संबंध है।गणित को विभिन्न विषयों से जोड़ते हुये पढ़ाना चाहिये। गणित का दैनिक जीवन में उपयोग बच्चों को सीखना जरूरी है।

| | | |
|---|---|---|
| **20 अप्रैल 2022,** अपराह्न 4:15-5:15 | सामाजिक विज्ञान: प्रकृति , प्रविधि एवं अंतरानुशासनिकता | डॉ.ऋषभ कुमार मिश्र |

डॉ. ऋषभ कुमार मिश्रा ने कहा कि सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत हम सामाजिक संरचना, संबंधों और प्रक्रियाओं का अध्ययन करते है। सामाजिक विज्ञान ने अपनी पद्धति विज्ञान से ली है।प्रत्येक शिक्षक की कक्षा में समाज का लघु रूप

उपस्थित होता है।हम बातचीत में समाज के व्याकरण का उपयोग करते है। पुनर्जागरण काल से विज्ञान को कसौटी के रूप मानकर समाज का अध्ययन किया।धीरे-धीरे सामाजिक विज्ञान ने अपनी पद्धति विकसित की।प्रथम विश्व युद्ध से द्वितीय विश्व युद्ध तक समाज में जिस प्रकार के सुधार हुए, सामाजिक विज्ञान के सभी विषयों से उसका गहरा संबंध होता था। सामाजिक विज्ञान से उच्च कक्षाओं में कई विषयों इतिहास ,नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थ शास्त्र ,राजनीति शास्त्र आदि।

| | | |
|---|---|---|
| **21 अप्रैल 2022**<br>**प्रातः** 11:00-12:00 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ-I | श्री अखिलेश यादव |

डॉ. अखिलेश यादव ने विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों की आवश्यकता एवं महत्व के संदर्भ में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों में विद्यार्थी सक्रिय रहकर ज्ञान आर्जित करते है। विषयवस्तु के अनुरूप शिक्षण विधियों के चयन से बालक की शिक्षण में रूचि बढ़ती है। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियां मुख्यतः मनोविज्ञान के सिद्धांतो पर आधारित होती है। पर्यटन विधि की उपयोगिता एवं क्रियान्वयन के संदर्भ में उदाहरण के साथ वर्णन किया। कथाकथन विधि की प्राचीन काल से महत्ता को स्पष्ट करते हुए कक्षा में विषयवस्तु स्पष्ट करने के लिए कथाकथन विधि की अधिकाधिक उपयोग की आवश्यकता बतायी। प्रोजेक्ट पद्धति विद्यार्थियों में नवनिर्माण क्षमता को बढ़ावा देती है। विद्याथियों को क्रियाशील बनाने के लिए प्रोजेक्ट पद्धति अधिक लाभकारक होती है।करके सीखने का अनुभव शिक्षार्थी स्वयं विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण विधि के माध्यम से करते है। ज्ञान के सृजन का अवसर उन्हें प्राप्त होता है। विद्यार्थी सीखने में अधिक रूचि लेते है। विद्यार्थी केंद्रित शिक्षण विधियाँ विद्यार्थियों की मनोभूमिका को ध्यान में रखकर शिक्षण प्रक्रिया को संचालित करने हेतु शिक्षक को प्रेरित करती है

| | | |
|---|---|---|
| **21 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 12:15-1:15 | विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ –II | डॉ. आदित्य चतुर्वेदी |

विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों की आवश्यकता एवं महत्व के विषय में जानकारी दी। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों में विद्यार्थी सक्रिय होते है। बालक की योग्यता और रूचि के अनुसार विषय-वस्तु का चयन किया जाता है।

विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियां अलग-अलग आयु के लिए अलग होती है। इन विधियों में समय अधिक लगता है पर स्थायी ज्ञान प्राप्त होता है। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों की आवश्यकता होती है। ये विधियाँ मनोविज्ञान के सिद्धांतों पर आधारित होती है। विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियों की सहायता से हम शिक्षण को रोचक बनाया जा सकता है। प्राथमिक एवं उच्च माध्यमिक कक्षाओं के लिए विद्यार्थी केन्द्रित शिक्षण विधियाँ अलग-अलग होती है । प्राथमिक स्तर पर किंडनगार्टन , खेल विधि ,मॉंटसरी आदि विधियों से पढ़ाया जाता है।प्रयोगशाला विधि, खोज विधि ,समस्या समाधान विधि ,परियोजना विधि आदि उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी विधियाँ हैं।

| | | |
|---|---|---|
| **21 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 3:00-4:00 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में कला - एकीकृत अधिगम | डॉ. राम अवध |

डॉ.राम अवध ने कहा कि सभी विषयों को कला के माध्यम से सिखाया जा सकता है।बालक में कला बचपन से ही किसी न किसी रूप में विद्यमान रहती है। कला आदिमानव काल में थी ,उस समय रेखाओं के माध्यम से चित्रकारी होती थी। कला के अंग , तत्व,सिद्धांत होते है।कला में मनुष्य स्वयं अपनी अभिव्यक्ति करता है।कला समेकित शिक्षा के द्वारा विषयों को कला के माध्यम से सिखाया जा सकता है। चित्रों में गणित कि आकृतियाँ बनाई जाती है। चित्रों के माध्यम से भाषा सिखाई जा सकती है। चित्रों के माध्यम से भूगोल ,देश की आर्थिक आदि को दर्शाया जा सकता है। मिट्टी के बर्तनों से विभिन्न आकृतियों को समझाया जा सकता है। नाटक ,कठपुतली के माध्यम से भी शिक्षा दी जा सकती है।

| | | |
|---|---|---|
| **21 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 4:15-5:15 | ज्ञानानुशासनों के विशेष संदर्भ में खेल - एकीकृत अधिगम | श्री. अनिकेत आंबेकर |

श्री अनिकेत आंबेकर ने बताया कि खेलों का जीवन में महत्व है। खेलों से शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक विकास होता है। शारीरिक शिक्षा अब एक पूर्ण विषय बन चुका है। शोध के पश्चात इसके कई उप विषय आ गये है। खेल के माध्यम से नेतृत्व क्षमता ,अनुशासन,देश भक्ति की भावना का विकास होता है। खेल के माध्यम से कई विषयों की

सिखाया जा सकता है। शारीरिक शिक्षा के माध्यम से हम कई प्रकार के रोजगार प्राप्त कर सकते है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति में स्वदेशी खेलों को विशेष महत्व दिया गया है।

| | | |
|---|---|---|
| **22 अप्रैल 2022**<br>**प्रातः** 11:00-12:00 | समावेशी शिक्षा I : अवधारणा , औचित्य एवं विभिन्न उपागम | डॉ. आर. पुष्पा नामदेव |

समावेशी शिक्षा की आवधारणा,औचित्य एवं विभिन्न उपागम को विस्तार से स्पष्ट किया। समतामूलक एवं समावेशी शिक्षा के संदर्भ मे NEP 2020 का संदर्भ लेते हुए विस्तार से चर्चा की । समावेशी शिक्षा हेतु जिन लक्ष्यों एवं उद्देश्यों को इंगित किया गया है, उसकी विस्तार से चर्चा की। NCF, 2005 ने सभी के लिए शिक्षा का अवसर प्रदान करने के संदर्भ की व्याख्या की है।व्याख्यान में समावेशी शिक्षा का औचित्य, इसकी आवश्यकता एवं महत्व पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते हुए समावेशी शिक्षा की अवधारणा को स्पष्ट किया।समावेशी शिक्षा विद्यालय में समावेशन के अभ्यास हेतू किस प्रकार के नियोजन कि आवश्यकता है एवं शिक्षकों कि समावेशी शिक्षा में किस प्रकार की भूमिका होनी चहिए, इसपर विस्तृत एवं बिन्दुवार चर्चा की गई।दिव्यांगो के प्रकार एवं कक्षा में इनके समायोजन हेतुकिस प्रकार की रणनीति एवं उपागमोंको कक्षा शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में अपनाना चहिए। इसपर उदाहरणों द्वारा स्पष्ट करने का प्रयास किया। अंत यह भी बताया गया कि समावेशी शिक्षा के द्वारा सभी के लिए शिक्षा एवं एक मानवतावादी एवं सुसंस्कृत समाज के स्थापना की ओर अग्रसर हो सकते हैं।

| | | |
|---|---|---|
| **22 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा II : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य , नीतियाँ एवं कार्यक्रम | डॉ. गुणवंत सोनोने |

डॉ. गुणवंत सोनोने ने एक कहानी के माध्यम से अपनी प्रस्तु ति का आरंभ किया। समावेशी शिक्षा का अर्थ विभिन्न विशेषज्ञों की परिभाषा ओं से अवगत कराया ।प्राचीन काल में अक्षम होना अपराध माना जाता था।यूनान और स्पार्टा की शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सैनिकों को तैयार करना था और उनका विश्वास था कि अक्षम बच्चे समाज के लिए अभिशाप है।पश्चिमी राष्ट्र में भी दिव्यांग बच्चों को जन्म के समय या उनकी शैशवकालीन अवस्था में ही मार दिया जाता था।दिव्यांगों की शिक्षा के लिए भी पश्चिमी देशों में प्रया सो के संदर्भ मे विस्तार से चर्चा की । भारत के संदर्भ मे चर्चा करते हुए भारतीय संविधान मे अंतर्निहित तत्वो, मूल्य एवं अनुच्छेद का संदर्भ लेते हुए समावेशी शिक्षा के लिये

किये गये प्रावधानो से अवगत कराया। NCF 2005, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, 1992 एवं 2020 का संदर्भ लेते हुए समावेशी शिक्षा का समग्रता से विवेचन किया । SSA, RAMSA, RTE का संदर्भ लेते हुए समावेशी शिक्षा के विकास की फलश्रुति का वर्णन किया।समावेशीशिक्षा के प्रसार के लिए स्थापित राष्ट्रीय संस्थान जैसे- दृष्टिबाधित का राष्ट्रीय संस्थान NIVH,देहरादून (उत्तराखंड),श्रवणबाधित का राष्ट्रीय संस्थान NIHH,मुंबई (महाराष्ट्र), मंदबुद्धि का राष्ट्रीय संस्थान NIMH,सिकंदराबाद (आंध्रप्रदेश),अस्थि विकलांग का राष्ट्रीय संस्थान NIPH,कलकत्ता (बंगाल)के कार्यों के संदर्भ विस्तार से अवगत कराया। स्वतंत्रता प्राप्ती के उपरान्त सामवेशी शिक्षा के लिए विभिन्न स्तरों पर किए गए उल्लेखनीय प्रयासों का संदर्भ लेते हुए विस्तारपूर्वक विवेचन किया गया।

| | | |
|---|---|---|
| **22 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 3:00-4:00 | दिव्यांगता I: शारीरिक रूप से विकलांग, श्रवण क्षतियुक्त, दृष्टि अक्षम बालक | डॉ. सुहासिनी वाजपेयी |

डॉ.सुहासिनी वाजपेयी ने कहा कि शिक्षक को अपने प्रत्येक छात्र के अनुरूप अपना शिक्षण करना चाहिये। यदि आप की कक्षा में कोई दिव्यांग छात्र है तो उसके अनुरूप शिक्षण कार्य करने का प्रयास करे। सबसे पहले हम दिव्यांग बच्चों को पहचाने फिर उसके अनुरूप शिक्षा दे। दिव्यांग छात्रों में कोई न कोई एक विशेष गुण पाया जाता है उस गुण को पहचान कर उसके विकास में हमें उनकी मदद करना चाहिए। 2011 की जनगणना के अनुसार 2.8 करोड़ दिव्यांग है ,जो कुल जनसंख्या का 2.21 % है ।राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में तकनीकी के प्रयोग पर विशेष बल दिया गया है। जिससे कक्षाओं को तकनीकी से समृद्ध बनाये और दिव्यांग छात्रों को भी उसका लाभ मिल सके। चिकित्सा के अनुसार 40% अपंगता हो और 60% ह्रास हो तो वह दिव्यांग कहलाता है। दिव्यांग छात्र बाधाओं के कारण समाज की क्रियाओं में भाग नहीं ले पाते। दिव्यांगता की चार श्रेणी होती है ।पहले कोई बीमार पड़ता है फिर उसके किसी अंग में क्षति होती है उससे उसमे अक्षमता आती है फिर वह विकलांग हो जाता है। शारीरिक, बौद्धिक, मानसिक,रक्तविकृति चार प्रकार की दिव्यांगता होती है ,जब किसी में एक से अधिक दिव्यांगता होती है तो उसे बहुदिव्यांगता कहते है। शारीरिक दिव्यांगता मुख्य रूप से चार प्रकार की होती है,दृष्टि बाधित,श्रवण बाधित, वाक् बाधित एवं अस्थि बाधित। शारीरिक दिव्यांगता के कारण कार्य करने में दिक्कत होती है। शारीरिक दिव्यांगता के बालक को सिर्फ कक्षा आने , कक्षा में बैठने की दिक्कत होती है। शारीरिक दिव्यांग वाले छात्रों के लिए विद्यालय में रेंप ,लिफ्ट व्हील चेयर, उनके अनुरूप फर्नीचर होना चाहिये। दिव्यांग छात्रों के अलग शौचालय,पीने के पानी की व्यवस्था होनी चाहिये।

| | | |
|---|---|---|
| **22 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 4:15-5:15 | दिव्यांगता II: बहुल विकलांग , वाक-दोष, भाषा विकास ग्रस्त बालक | डॉ. हेमचन्द्र ससाने |

डॉ. हेमचन्द्र ससाने द्वारा “दिव्यांगता : बहुल विकलांग, वाक् दोष, भाषा विकास ग्रस्त बालक”, इस विषय पर समग्र दृष्टि से विस्तारपूर्वक चर्चा की गयी।विशिष्ट बालक की अवधारणा पर चर्चा की। विशिष्ट क्षमता रखने वाले बालकों की शैक्षिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने हेतु निरंतर प्रयास की आवश्यकता पर बल दिया। बहुविकलांगता के प्रकार, कारण एवं विशेषता के संदर्भ में विवेचन किया। ब्लैक मूवी एवं अन्य वीडियो के माध्यम से विषय को अधिगमक्षम बनाने का प्रयास किया। सामान्य क्षमता वाले व्यक्तियों के जैसे दिव्यांग व्यक्ति भी सामान्य जीवन यापन ही नहीं बल्कि अव्वल स्थान प्राप्त कर सकता है । इसके लिए सुधा चंद्राका उदाहरण दिया ।वाक् दोष के कारण एवं सुधार के लिए प्रयासों का विवेचन किया गया। भाषा विकास ग्रस्त बालक के शैक्षिक विकास के लिए आवश्यक उपायों की चर्चा की। अधिगम अक्षम विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में शिक्षक, अभिभावक आदि की भूमिका का भी विस्तार से विश्लेषण किया।

| | | |
|---|---|---|
| **23 अप्रैल 2022**<br>**प्रातः** 11:00-12:00 | समावेशन के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम और बहुसांस्कृतिक शिक्षा | श्री. धीरज मसराम |

श्री.धीरज मसराम ने समावेशन के सामजिक-सांस्कृतिक आयाम और बहु सांस्कृतिक शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त किए। शिक्षा और समाज के संबंध पर विस्तारपूर्वक चर्चा की। NCMRR प्रतिमान के संदर्भ मे जानकारी से अवगत कराया। विडीयो के माध्यम से विषय को सम्यक रूप से प्रस्तुत किया। दिव्यांग बालको के लिए विद्यालय, शिक्षक, अभिभावक, परिवार एवं समाज कि भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। दिव्यांग बच्चा विकास करने में अगर असमर्थ होगा तो यह हम सभी कि असफलता होगी।

| | | |
|---|---|---|
| **23 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 12:15-1:15 | समावेशी शिक्षा के सिद्धांत एवं शिक्षण युक्तियाँ | डॉ. प्रमोद जोशी |

समावेशी शिक्षा प्राप्त करना किसी विशेष समुदाय विशेष जाति या विशेष वर्ग का ही अधिकार नहीं होता। प्रत्येक बच्चा चाहे वह किसी भी वर्ग का हो उसे शिक्षा प्राप्त करने से कोई नहीं रोक सकता। समाज में व्याप्त हर तरह की दुविधा को दूर करने के लिए समावेशी शिक्षा का प्रत्यय आया और सभी को शिक्षा के समान अवसर प्राप्त हो सके। इसके लिए भारतीय संविधान व सरकार की तरफ से विभिन्न में प्रावधान किए गए हैं। समाज का प्रत्येक वर्ग शिक्षा प्राप्त करें और वह समाज में अपनी भूमिका निर्धारित करने तक इसके लिए समावेशी शिक्षा के सिद्धांतों का विशेष रूप से जाना जाता है जिसमें समाज के प्रत्येक बच्चे तक शिक्षा की पहुंच होनी चाहिए। समाज का प्रत्येक बच्चा विद्यालय तक आए, इसके बाद सभी में समानता का भाव होना चाहिए।समानता के बाद सभी विद्यार्थियों के विद्यालय में समान भागीदारी होनी चाहिए जो कि विद्यालय में हिंदी वाली विविध गतिविधियों में सभी को बिना किसी भेदभाव के करने

से पूरी होगी। शिक्षक समाज के एक सशक्त व्यक्ति बनने के साथ समाज व लोकतंत्र की नीति के लिए कार्य करेंगे वह अपनी एक भूमिका सुनिश्चित कर पाएंगे।

| | | |
|---|---|---|
| **23 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 3:00-4:00 | समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या | डॉ. नरेंद्र पाल |

डॉ. नरेंद्र पाल द्वारा "समावेशी शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या" इस विषय पर विस्तार से चर्चा की ।इन्होंने समावेशी शिक्षा की विशेषता, महत्व, प्रक्रिया आदि का विस्तृत विवेचन किया। समावेशी पाठ्यचर्या के 6 बिंदु का विशेष महत्व उदृत किया, जैसे प्रत्याशित, लचीला, जबाबदेह, सहयोगी, पारदर्शी एव न्यायसंगत आदि । पाठ्यचर्या के सिद्धांतो का विस्तार से वर्णन किया। शिक्षकों के रुप में हमें यह स्वीकार करने की आवश्यकता है कि सुलभ पाठ्यक्रम विकसित करना एक मौलिक समान अवसर और मानवाधिकार का मुद्दा है इसे सुव्यवस्थित एवं प्रभावी करना हमारी चुनौती है।

| | | |
|---|---|---|
| **23 अप्रैल 2022**<br>अपराह्न 4:15-5:25 | संपूर्ति सत्र | अध्यक्षता: प्रो.मनोज कुमार, अधिष्ठाता, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ |

प्रो. मनोज कुमार ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए भाषा और शिक्षा के प्रश्नों को सभ्यता , संस्कृति और भविष्य से जुड़ा हुआ बताया। इन्होंने बल दिया कि एक अध्यापक को शिक्षण के दौरान जीविका, पड़ोस और प्रकृति के पारस्परिक संबंध को ध्यान में रखना चाहिए। तात्पर्य है कि जीविका , जीवन और जीव आपस में संबंधित हैं। ये हमारे विषय शिक्षण में प्रकट रूप से सम्मिलित होना चाहिए। आप ने गांधी और विनोबा के विचारों का संदर्भ देते हुए कहा कि मातृभाषा में शिक्षा सृजन को पोषित करती है। हमारे अध्यापकों को विद्यार्थियों की मातृभाषा के शिक्षणशास्त्रीय महत्व को समझना होगा। इसके बिना वे सामाजिक बदलाव के बीज नहीं बो सकते हैं। कक्षा शिक्षण में भाषा की भूमिका को रेखांकित करते हुए संदर्भ और शब्द के अर्थ में पारस्परिकता को व्याख्यायित किया। शिक्षक शब्दों को संगठित कर उन्हें अर्थवान करते हैं। इन्होंने कहा कि हमें अहिंसा की आधारभूमि पर 21 वीं सदी की शिक्षा को खड़ा करना होगा। इसके साथ हमें स्वराजबोध को भी पोषित करना होगा। इसकी संभावना राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 में निहित है। इस दिशा में महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय सक्रिय पहल कर रहा है। कार्यक्रम के अंत में डॉ आर. पुष्पा नामदेव ने आभार ज्ञापन प्रस्तुत किया। संपूर्ति सत्र का संचालन डॉ सारिका राय शर्मा ने किया। इस सत्र में डॉ ऋषभ कुमार मिश्र ने कार्यशाला का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया।

संलग्नक 3 (12)

# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय
## Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
*University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)*
नैक द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त Accredited with 'A' Grade by NAAC

ज्ञान शांति मैत्री

आज़ादी का अमृत महोत्सव

**दूर शिक्षा निदेशालय**
**बी.एड.**
**कार्यशाला**
**विद्यालय संपर्क कार्यक्रम**
**द्वितीय सेमेस्टर की प्रायोगिकी**
**(10 मई 2022 से 13 मई 2022)**

| कार्यशाला समन्वयन: डॉ ऋषभ कुमार मिश्र, डॉ आर. पुष्पा नामदेव और डॉ सारिका राय शर्मा<br>प्रतिवेदन और अध्येताओं की प्रतिपुष्टि: डॉ गुणवंत और डॉ आदित्य | | | |
|---|---|---|---|
| तिथि | समय | प्रकरण | संबंधित संकाय सदस्यगण |
| 10 मई 2022 | 10:30-11:00 | द्वितीय सेमेस्टर के प्रायोगिक कार्यों का परिचय | डॉ ऋषभ, डॉ सारिका, डॉ पुष्पा डॉ गुणवंत और डॉ आदित्य |
| 10 मई 2022 | 11:00-12:00 | कक्षा शिक्षण अवलोकन : निहित सिद्धांत , शिक्षण से संबंध और दक्षताएं | डॉ ऋषभ कुमार मिश्र |
| 10 मई 2022 | 12:00-1:00 | कक्षा शिक्षण अवलोकन: प्रविधि और रिपोर्ट लेखन | डॉ गुणवंत सोनोने |
| 11 मई 2022 | 11:00-12:00 | विद्यालय परिवेश और विद्यालय की गतिविधियां: अधिगम और अधिगमकर्ता से संबंध | डॉ आर. पुष्पा नामदेव |
| 11 मई 2022 | 12:00-1:00 | विद्यालय परिवेश में गतिविधियों का अवलोकन रिपोर्ट लेखन एवं परियोजना तैयार करना | डॉ आदित्य चतुर्वेदी |
| 12 मई 2022 | 11:00-12:00 | पाठ्य सहगामी क्रियाओं के विविध आयाम | पैनल चर्चा (डॉ ऋषभ, डॉ सारिका, डॉ पुष्पा डॉ गुणवंत और डॉ आदित्य) |
| 12 मई 2022 | 12:00-1:00 | पाठ्य सहगामी क्रिया का आयोजन, प्रबंधन एवं रिपोर्ट लेखन | डॉ गुणवंत सोनोने |
| 13 मई 2022 | 11:00-12:00 | विद्यालय दैनिकी: अवधारणा , वृत्तिक विकास में भूमिका | डॉ सारिका राय शर्मा |
| 13 मई 2022 | 12:00-1:00 | विद्यालय दैनिकी लेखन | डॉ आदित्य चतुर्वेदी |

07-5-2022

**पाठ्यक्रम समन्वयक** | **निदेशक दूर शिक्षा**



Scanned with CamScanner

दिनांक 10 मई 2022 को प्रातः काल बी.एड. द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थियों की कार्यशाला का शुभारंभ हुआ। इस कार्यशाला के प्रथम सत्र में प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए उन्हें प्रायोगिक कार्य का परिचय दिया गया। सहभागियों को प्रायोगिक कार्य का परिचय देते हुए सर्वप्रथम पाठ्यचर्या समन्वयक डॉ ऋषभ कुमार मिश्र ने विद्यार्थियों को उनकी पृष्ठभूमि के आधार पर विद्यालय और विषय को ध्यान में रखते हुए भावी योजना बनाने का सुझाव दिया। तदुपरांत डॉ सारिका राय शर्मा ने सहभागियों को मननशील चिंतक की भूमिका से परिचित कराया। इस चर्चा को आगे बढ़ाते हुए डॉ पुष्पा नामदेव ने विद्यालय परिवेश में आयोजित की जाने वाली गतिविधियों की महत्ता और उसमें अध्यापक की भूमिका पर प्रकाश डाला। चर्चा को आगे बढ़ाते हुए उन्होंने विद्यालय परिवेश में आयोजित होने वाली पाठ्य सहगामी क्रियाओं की प्रस्तावना प्रस्तुत की। इस चर्चा का समर्थन करते हुए डॉ आदित्य ने विद्यालय संपर्क कार्यक्रम की रिपोर्ट लेखन के ऊपर प्रकाश डाला। प्रथम सत्र के उपरांत द्वितीय छमाही के प्रत्येक घटक पर विस्तार पूर्वक चर्चा हुई।

**प्रथम दिवस द्वितीय सत्र:** (10 मई 2022, 11:00-12:00)
इस सत्र में विद्यार्थियों को कक्षा शिक्षण अवलोकन के सिद्धांत और अभ्यास से परिचित कराया गया। इस सत्र में विषय विशेषज्ञ के रूप में डॉ ऋषभ कुमार मिश्र उपस्थित थे। इस सत्र में उन्होंने बल दिया कि एक शिक्षक को अपनी कक्षा में होने वाली गतिविधियों के प्रति सचेत होना चाहिए। शिक्षक को विद्यार्थियों की गतिविधियों व कक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नों और कक्षा में प्रयुक्त किए जाने वाली शिक्षण सहायक सामग्रियों आदि को ध्यान में रखकर शिक्षण का आयोजन करना चाहिए।

**प्रथम दिवस तृतीय सत्र (10 मई 2022, 12:00-01:00)**

इस सत्र में डॉ गुणवंत सोनोने ने कक्षा शिक्षण अवलोकन की रिपोर्ट लेखन पर विद्यार्थियों से चर्चा की। उन्होंने दूर शिक्षा निदेशालय द्वारा तैयार किए गए प्रारूप को विद्यार्थियों के सम्मुख रखा और इसके आधार पर समझाया कि किस प्रकार से विद्यार्थियों को कक्षा का अवलोकन करना है। उन्होंने एक लिखित प्रारूप भी विद्यार्थियों के साथ साझा किया गया।

**द्वितीय दिवस प्रथम सत्र (11 मई 2022, 11:00-12:00)**

इस सत्र में डॉ पुष्पा नामदेव ने प्रस्तुति दी। इस सत्र में विद्यालय की गतिविधियों के बारे में विद्यार्थियों से चर्चा की गई। विद्यार्थियों को सचेत किया कि विद्यालय परिसर में होने वाली गतिविधियां विद्यार्थियों के विकास का एक महत्वपूर्ण साधन है। विद्यालय परिसर में अध्यापक के मार्गदर्शन में और विद्यार्थियों के स्वतंत्र दायित्व में गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। एक अध्यापक को इन गतिविधियों के आयोजन के प्रति सचेत होना चाहिए। शिक्षकों को ध्यान रखना चाहिए इनमें विद्यार्थियों की भागीदारी अधिकतम हो।

**द्वितीय दिवस द्वितीय सत्र (11 मई 2022, 12:00-1:00)**

डॉ पुष्पा नामदेव के सत्र के उपरांत डॉक्टर आदित्य चतुर्वेदी ने विद्यालय गतिविधियों के आयोजन के संबंधित रिपोर्ट लेखन पर विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने विद्यार्थियों के लिए बनाई गई हैंडबुक को ध्यान में रखते हुए उसका प्रतिरूप विद्यार्थियों के सम्मुख प्रस्तुत किया।

**तृतीय दिवस**

12 मई 2022 को विद्यार्थियों के लिए का आयोजन पैनल चर्चा का आयोजन किया गया। इस पैनल चर्चा में साधन सेवी के रूप में डॉ ऋषभ डॉ पुष्पा नामदेव, डॉ आदित्य और डॉ गुणवंत उपस्थित थे। इस पैनल चर्चा के विषय विशेषज्ञों ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में पाठ्य सहगामी क्रियाओं के महत्व पर चर्चा की। सभी विषय विशेषज्ञों की राय थी कि पाठ्य सहगामी क्रियाएं विद्यार्थियों के समग्र विकास में योगदान करती हैं। पाठ्य सहगामी क्रियाएं विद्यार्थियों की क्षमताओं और अनुसार होनी चाहिए।

**तृतीय दिवस (द्वितीय सत्र 11:00-12:00)**

कार्यशाला के तीसरे दिन विद्यालय डॉक्टर सारिका राय शर्मा ने मननशील चिंतन के ऊपर प्रस्तुति की। उन्होंने सहभागियों के साथ साझा किया कि मननशील अध्यापक शिक्षण के पूर्व शिक्षण के दौरान शिक्षण के उपरांत अपनी की गई गतिविधियों और लिए गए फैसलों के प्रति मननशील रहते हैं। मननशील चिंतन से शिक्षण की गुणवत्ता बेहतर होती है। मननशील चिंतन अध्यापकों को आत्मालोचन का भी मार्ग प्रशस्त करता है।

**तृतीय दिवस ( तृतीय सत्र 12:00-1:00)**

इसके उपरांत डॉ आदित्य चतुर्वेदी ने विद्यार्थियों के लिए विकसित हैंडबुक का संदर्भ लेते हुए उन्हें विद्यालय की लेखन के संदर्भ में मार्गदर्शन किया।

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रिय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya,Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

## व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (शिक्षा - 025)

## द्वितीय सेमेस्टर (सत्र 2016-18)

# मार्गदर्शक पुस्तिका

**अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम**

शिक्षा स्नातक (बी.एड.) मुक्त एवं दूर शिक्षा

## दूर शिक्षा निदेशालय

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

पोस्ट- हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा - 442001 (महाराष्ट्र)

य)

## मार्गदर्शक

**प्रो.गिरीश्वर मिश्र**
कुलपति
म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**प्रो.आनंद वर्धन शर्मा**
प्रतिकुलपति
म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**प्रो. अरबिंद कुमार झा**
निदेशक, दूर शिक्षा निदेशालय
म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

---

## सलाहकार मंडल

**डॉ. गोपाल कृष्ण ठाकुर**
समन्वयक- बी.एड.पाठ्यक्रम(2015-17),
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**डॉ. शिरीष पाल सिंह**
समन्वयक- बी.एड.पाठ्यक्रम(2016-18),
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**श्री ऋषभ कुमार मिश्रा**
समन्वयक- बी.एड.पाठ्यक्रम(2015-17),
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**सुश्री सारिका राय शर्मा**
समन्वयक- बी.एड.पाठ्यक्रम(2016-18),
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

---

## निर्माण समिति

**डॉ. गुणवंत सोनोने**
सहायक प्राध्यापक,
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**डॉ. आदित्य चतुर्वेदी**
सहायक प्राध्यापक,
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**डॉ. समीर कुमार पाण्डेय**
सहायक प्राध्यापक,
दूरशिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

**श्री ब्रम्हा नन्द मिश्र**
सहायक प्राध्यापक,
दूर शिक्षा निदेशालय,म. गां. अं. हिं. वि., वर्धा

## प्रस्तावना

विद्यालय संपर्क कार्यक्रम अध्यापक शिक्षा का एक अभिन्न अंग है। यह अध्येताओं को शिक्षण अभ्यास से परिचित कराता है तथा तत्संबंधी मार्गदर्शन भी करता है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत वे विद्यालय में नियमित रूप से होने वाली सभी गतिविधियों का अवलोकन करेंगे, वहाँ के शिक्षक, छात्र एवं अन्य संबंधित लोगों से अंत: क्रिया करेंगे एवं शिक्षण योजना का निर्माण भी करेंगे।इसके साथ ही वे निम्नलिखित कार्यों का व्यवस्थित रूप से निष्पादन करेंगे -

- कक्षा शिक्षण अवलोकन एवं रिपोर्ट लेखन
- विद्यालय परिवेश व अन्य गतिविधियों का अवलोकन
- रिपोर्ट लेखन एवं परियोजना तैयार करना
- पाठ तथा प्रबंधन सहभागी क्रिया का आयोजन-
- विद्यालय दैनिकी

इस कार्यक्रम में विद्यालय अवलोकन से प्राप्त अनुभवों द्वारा अध्येता अपने विषय शिक्षण के ज्ञान और समझ को परिमार्जित करेंगे तथा पूर्ण आत्मविश्वास के साथ परवर्ती शिक्षण अभ्यास कार्यक्रम के विभिन्न गतिविधियों का प्रभावशाली रूप में निष्पादन करेंगे।

## कार्यक्रम उद्देश्य

इस कार्यक्रम के द्वारा छात्राध्यापक निम्नलिखित योग्यताएँ विकसित करने में सक्षम होंगे -

- वे विद्यालय में नियमित रूप से होनेवाली गतिविधियों की आलोचनात्मक समझ विकसित करेंगे।
- वे कक्षा में शिक्षार्थियों के बीच एवं शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के बीच होने वाली अंत: क्रियाओं का विश्लेषण करेंगे तथा उसका प्रारूप तैयार करेंगे।
- वे नियमित शिक्षकों द्वारा कक्षा में व्यवहार में लाए जानेवाली अधिगम गतिविधियों या अधिगम अनुभवों के चयन तथा क्रियान्वयन की आलोचनात्मक समझ विकसित करेंगे।
- वे नियमित शिक्षकों द्वारा शिक्षार्थियों को अधिगम या अधिगम सह आकलन क्रियाओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु व्यवहार में लाये जाने वाले विभिन्न साधनों तथा तकनीकी की समझ विकिसित करेंगे ।
- वे नियमित शिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों के अधिगम तथा उपलब्धि के लिए व्यवहार में लाए जानेवाले विभिन्न साधनों तथा तकनीकी की समझ विकसित करेंगे।
- वे कक्षा की गतिविधियों तथा पाठ सहगामी क्रियाओं के आयोजन तथा प्रबंधन की समझ पैदा करेंगे।।
- वे विद्यालय दैनिकी द्वारा विद्यालय के विभिन्न क्रियाकलापों का गहन अध्ययन कर उनके विभिन्न पक्षों पर विचार -विमर्श करने की क्षमता विकसित करेंगे ।

## कार्यक्रम अवधि

इस कार्यक्रम की अवधि कुल **एक सप्ताह** की होगी। यह कार्यक्रम द्वितीय सेमेस्टर में आयोजित किया जाएगा।

## कार्यक्रम संरचना

यह कार्यक्रम कुल 4 क्रेडिट का होगा ,जिसमें अध्येता वास्तविक विद्यालय परिस्थिति में निम्नलिखित गतिविधियों का किसी वरिष्ठ शिक्षक, प्रिन्सिपल या पर्यवेक्षक के मार्गदर्शन में निष्पादन करेंगे।

**व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम (100 अंक) क्रेडिट 4**

| **अ.क्र.** | **कोड** | **क्रेडिट** | व्यक्तिगत संपर्क कार्यक्रम एक सप्ताह के)**लिए( | **अंक** | **कुल अंक** |
|---|---|---|---|---|---|
| 01 | 025 | 02 | कक्षा शिक्षण अवलोकन एवं रिपोर्ट लेखन चयनित विषयों के : कक्षा अवलोकन (10) एवं अन्य विषयों के (05) एवं सारांश ***(प्रत्येक कक्षा अवलोकन के लिए अधिकतम अंक और 03 ( अंक 05 सारांश लेखन के लिए अधिकतम*** | 50 | 50 |
| 02 | | 02 | • विद्यालय परिवेश व अन्य गतिविधियों का अवलोकन, ***15 अधिकतम)*** रिपोर्ट लेखन एवं परियोजना तैयार करना ***( अंक*** | 15 | 50 |
| | | | • पाठ 05) सहगामी क्रिया का आयोजन तथा प्रबंधन-पाठ- (सहगामी क्रिया***(प्रत्येक पाठसहगामी क्रिया का- ,आयोजन प्रबंधन एवं रिपोर्ट लेखन के लिए अधिकतम ( अंक 04*** | 20 | |
| | | | • विद्यालयी दैनिकी एक)सप्ताह( ***(प्रत्येक दिन की दैनिकी के लिए अधिकतम अंक और रिपोर्ट लेखन के लिए 02 0 अधिकतम3 अंक (*** | 15 | |
| **कुल क्रेडिट 04** | **-** | | | | **100** |

## कार्यक्रम के विभिन्न गतिविधियों का विवरण

# 1. कक्षा शिक्षण अवलोकन एवं रिपोर्ट लेखन

कक्षा अवलोकन ,विद्यालय संपर्क कार्यक्रम का अभिन्न अंग है,इसके द्वारा कक्षा में चल रहे विभिन्न गतिविधियों का अवलोकन किया जाएगा। विद्यार्थी नियमित शिक्षकों द्वारा कक्षा में व्यवहार में लाये जाने वाले अधिगम गतिविधियों या अधिगम अनुभवों के चयन तथा क्रियान्वयन की समझ विकसित करेंगे और उन गतिविधियों का आलोचनात्मक अध्ययन करेंगे। यह समस्त विवरण तृतीय सेमेस्टर में कक्षा शिक्षण को प्रभावी बनाने में सहायक होगा। इस हेतु छात्राध्यापक को चयनित विषय शिक्षण से संबन्धित 5 एवं अन्य विषय से संबन्धित 10 कक्षा अवलोकन करना होगा। जिसकी रिपोर्ट निम्न सारणी के द्वारा अपनी समझ को विस्तार करके लिखना होगा -

कक्षा .......................... विषय ................ दिनांक......................

नियमित शिक्षक/अतिथि शिक्षक/छात्राध्यापक का नाम ......................................................................

1. शिक्षक निर्धारित समय पर कक्षा में उपस्थित हुए। हाँ/नहीं
2. शिक्षक द्वारा अपनाई जा रही शिक्षण पद्धति। ................. परम्परावादी/निर्माणवादी................
3. शिक्षक द्वारा उपयोग की गई नवाचारी पद्धति का नाम – ABL/ALM/ सह-अध्यापन (Co-Teaching)/ अन्य ................................
4. क्या समूह निर्माण प्रक्रिया कक्षा शिक्षण के दौरान अपनाई गई है? हाँ/नहीं
   यदि हाँ तो कितने समूह बनाये गये और प्रत्येक समूह में करवाई गई गतिविधियों को लिखें?
   ..........................................................................................................................................
5. क्या शिक्षक द्वारा शिक्षण अधिगम सामग्री का उपयोग किया गया है? हाँ/नहीं
   यदि हाँ तो अधिगम सामग्री का नाम लिखे। ..........................................................................
6. प्रयुक्त शिक्षण अधिगम सामग्री किस प्रकार की थी? स्वनिर्मित/तैयार सामग्री/परिवेश आधारित
   ..........................................................................................................................................
7. क्या अधिगम सामग्री का उपयोग बच्चों द्वारा किया गया ? हाँ/नहीं
   यदि हाँ तो इससे विषयवस्तु की अवधारणा किस प्रकार स्पष्ट हो रही थी। अपनी टिप्पणी लिखे - ..........................................................................................................................................
8. क्या बच्चे कक्षा में प्रश्न पूछ रहे थे?

यदि हाँ तो बच्चों द्वारा कौन-कौन से प्रमुख प्रश्न पूछे गये?

(अ)..................................................................................................................................

(ब) ..................................................................................................................................

(क)..................................................................................................................................

9. शिक्षक द्वारा बच्चों की जिज्ञासा एवं अधिगम को किस प्रकार स्थायित्व प्रदान किया गया? विस्तार से लिखें?

..........................................................................................................................................

क्या शिक्षक कक्षा में धीमी गति से सीखने वाले बच्चों को समय दे पा रहे थे? ... ............ हाँ/नहीं

यदि हाँ तो कमजोर व धीमी गति से सीखने वाले बच्चों के लिये क्या विशेष व्यवस्था की गई है ? विस्तार से लिखें ?

..........................................................................................................................................

क्या बच्चों को नियमित गृहकार्य/प्रोजेक्ट कार्य दिया जा रहा हैं?.......... हाँ/नहीं

10. क्या बच्चों के गृहकार्य/प्रोजेक्ट कार्य पूरा चर्चा की गई? ...................... हाँ/नहीं

11. क्या बच्चों के गृहकार्य/प्रोजेक्ट कार्य को जाँचकर मौखिक/लिखित फीडबैक दिया जाता हैं ? हाँ/नहीं

12. शिक्षक द्वारा कक्षा शिक्षण के दौरान अभ्यास पुस्तिका में कौन-कौन सी गतिविधि करवाई गई ? लिखें। ..................................................................................................................................

13. शिक्षक द्वारा अपने शिक्षण का स्वमूल्यांकन किया गया? ...................................... हाँ/नहीं

यदि हाँ तो किस प्रकार लिखें ? ..............................................................................................

14. उपरोक्त कक्षा अवलोकन के पश्चात कक्षा शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया से संबंधित आपके व्यावहारिक ज्ञान में कितनी वृद्धि हुई? विस्तार से लिखें

..........................................................................................................................................

प्रधानाध्यापक के हस्ताक्षर (सील सहित)

नाम : ..........................................................

संस्था का नाम : - ..........................................

दिनांक :- ....................................................

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर ...............................

नाम : ........................................................

संस्था का नाम : - .......................................

दिनांक :- ..................................................

# 2. विद्यालय परिवेश एवं अन्य गतिविधियों का अवलोकन

विद्यालय में कक्षा अवलोकन से शेष समय के दौरान छात्राध्यापक द्वारा विद्यालय की प्रार्थना सभा, विद्यालय के बारे में सामान्य जानकारी ,भौतिक पक्ष,अकादमिक पक्ष एवं अन्य गतिविधियों का अवलोकन भी किया जाएगा। इस अवलोकन के विवरण को अन्य रिपोर्ट के रूप में अध्येता प्रस्तुत करेंगे।

विद्यालय का नाम - ............................................. क्षेत्र -........................................................

जनशिक्षा केन्द्र - ............................. विकासखण्ड-......................................... जिला-............................

संकुल केन्द्र- ................................ अवलोकन दिनांक- .........................................

**प्रार्थना सभा अवलोकन प्रपत्र**

विद्यालय का नाम ....................................................................... दिनांक..........................................

1. प्रार्थना सभा का आयोजन नियमित होता है ............. हाँ/नहीं
2. प्रार्थना सभा में पचांग(कैलण्डर) का क्या नियमित वाचन होता है।

   (हिन्दी माह एवं अंग्रेजी माह सहित) हाँ/नहीं
3. प्रार्थना सभा का प्रारंभ होता है ....... राष्ट्रीय गीत/सरस्वती वंदना/अन्य
4. विद्यालय में सरस्वती वंदना होती है। हाँ/नहीं
5. क्या प्रार्थना सभा में सुविचार/अमृत वचन बोले जाते हैं? हाँ/नहीं
6. समाचारों का वाचन नियमित होता है।
   यदि हाँ तो, समाचारों का क्रम किस प्रकार होता है संख्या में अंकित करें।
   स्थानीय, प्रादेशिक (राज्य स्तर), राष्ट्रीय स्तर, खेल, समाचार, अंतरराष्ट्रीय समाचार, भौगोलिक समाचार।
7. क्या प्रार्थना सभा में देशभक्ति/प्रेरणा गीत गाया जाता है - हाँ/नहीं
   यदि हाँ, तो कौन सा देशभक्ति गान ......... प्रेरणा गीत ...........................................
8. प्रार्थना सभा में बच्चों के जन्मदिन का कार्यक्रम शामिल है .................... हाँ/नहीं
   यदि हाँ तो दिनांक...... को कुल ........ बच्चों का जन्म दिन अभिनन्दन किया गया।

बच्चों के नाम		कक्षा

1. .................		....................................
2. .................		....................................
3. .................		....................................
4. .................		....................................

9. प्रार्थना सभा में योग/ध्यान क्रियाएं शामिल हैं.......................... हाँ/नहीं

10. क्या प्रार्थना सभा के अंत में सामूहिक जयघोष किया जाता है.................. हाँ/नहीं

11. प्रार्थना सभा में प्रधानाध्यापक/ शिक्षकों द्वारा प्रेरक संदेश दिया जाता है। हाँ/नहीं

12. विद्यालय समय समापन होने पर राष्ट्रगान का आयोजन किया जाता है। ..... हाँ/नहीं

विद्यालय प्रमुख के हस्ताक्षर (सील सहित)
नाम : ..............................
संस्था का नाम : - ...........................................
दिनांक:- ..................................

छात्राध्यापक के हस्ताक्षर .........
नाम : ................................
संस्था का नाम : - ............................
दिनांक:- ..................................

## (अ) सामान्य जानकारी

1. विद्यालय के प्रधानाध्यापक/प्रभारी का नाम ...................................
2. विद्यालय में कार्यरत शिक्षकों की कुल संख्या................................
   अ) पदस्थ शिक्षक ................ (ब) अतिथि शिक्षक ............................
3. स्टॉफ उपस्थिति – कुल .........(अ) पदस्थ शिक्षक ...............(ब) अतिथि शिक्षक ......................
4. कक्षावार उपस्थिति –

| कक्षा | दर्ज | | | उपस्थिति | | | अनुपस्थिति | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | बालक | बालिका | योग | बालक | बालिका | योग | बालक | बालिका | योग |
| 6 | | | | | | | | | |
| 7 | | | | | | | | | |
| 8 | | | | | | | | | |
| 9 | | | | | | | | | |
| 10 | | | | | | | | | |
| 11 | | | | | | | | | |
| 12 | | | | | | | | | |

7 विद्यालय में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की कुल संख्या...........

(अ) बालक .........

(आ) बालिका .........

## (ब) भौतिक पक्ष –

1. विद्यालय भवन ........... शासकीय भवन / किराये पर

2. विद्यालय में बाउण्ड्रीवाल ........... हाँ/नहीं

3. विद्यालय में सूचना पटल है........... हाँ/नहीं

4. सूचना पटल पर विद्यालय संबंधित सूचनाएं प्रदर्शित है.......... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

5. कक्षाओं में ग्रीन/ब्लैक बोर्ड........... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

6. प्रधानाध्यापक कक्ष ........... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

7. प्रधानाध्यापक हेतु फर्नीचर/कुर्सी टेबल ........... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

8. स्टॉक हेतु बैठक व्यवस्था ........... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

9. स्टॉक हेतु कुर्सी टेबल.......... उपलब्ध /अनुपलब्ध/अस्थाई व्यवस्था

10. कक्षाओं में बच्चोंके बैठक की व्यवस्था ........... फर्नीचर /टाटपट्टी/दरी/चटाई

11. कक्षा में बच्चों की संख्या के आधार पर बैठक व्यवस्था ........... पर्याप्त/अपर्याप्त

12. कक्षाओं का आकार बच्चोंकी संख्या के अनुसार.......... पर्याप्त/अपर्याप्त

13. विद्यालय में बिजली एवं पंखे की व्यवस्था ........ उपलब्ध/अनुपलब्ध

14. पीने के पीने की व्यवस्था ...... उपलब्ध/अनुपलब्ध

15. पीने के पानी के संग्रह का साधन......... मटका/स्टील टंकी/सीमेन्ट टंकी/ बोरिंग

16. विद्यालय में अभिलेखों को संसाधन......... पेटी/अलमारी/खुली रैंक/टेबल रेफ/कोई अन्य साधन

17. विद्यालय में मध्यान्ह भोजन हेतु किचन रोड..... उपलब्ध/अनुपलब्ध

18. मध्यांह भोजन बनाने हेतु बर्तन......... उपलब्ध/अनुपलब्ध

19. मध्यान्ह भोजन खिलाने हेतु बर्तन………… उपलब्ध/अनुपलब्ध

21. विद्यालय में खेल सामग्री ............... उपलब्ध/अनुपलब्ध

21. विद्यालय में खेल सामग्री ........ उपलब्ध/अनुपलब्ध

22. विद्यालय में उपलब्ध खेल सामग्री का नाम ................................

23. विद्यालय में रैम्प की सुविधा ........................... उपलब्ध/अनुपलब्ध

24. शिक्षण सहायक सामग्री की उपलब्धता ............ उपलब्ध/अनुपलब्ध

25. कक्षा-कक्षा में टी.एल.एम. सामग्री .............. प्रदर्शित/संधारित/दोनों

26. कक्षा-कक्ष में टी.एल.एम. सामग्री ......................... शिक्षक या बच्चों द्वारा स्वनिर्मित/तैयार सामग्री/दोनों

27. विद्यालय में कम्प्यूटर की उपलब्धता ................ उपलब्ध/अनुपलब्ध

28. विद्यालय में रेडियों की उपलब्धता ........... उपलब्ध/अनुपलब्ध

29. विद्यालय में घंटी की व्यवस्था .......... उपलब्ध/अनुपलब्ध

30. विद्यालय में शौचालय की व्यवस्था उपलब्ध/अनुपलब्ध

31. शौचालय स्टॉफ हेतु अलग से है- ................ हाँ/नहीं

32. बालक-बालिकाओं के लिए अलगअलग शौचालय है ..... हाँ/नहीं

33. विद्यालय में गणित/विज्ञान कि किट हैं ........... हाँ/नहीं

34. सफाई कर्मी : ........................ उपलब्ध/अनुपलब्ध

- विद्यालय में सफाई व्यवस्था .......... उपलब्ध/अनुपलब्ध
- विद्यालय परिसर साफ-सुथरा है.................. हाँ/नहीं
- बच्चे साफ कपडों में आते हैं ............ हाँ/नहीं

- बच्चे के नाखून कटे हुए हैं......... हाँ/नहीं
- बच्चे हाथ धोकर मध्यान्ह भोजन करते हैं ...... हाँ/नहीं
- पीने के पानी के बर्तन साफ व स्वच्छ हैं ........ हाँ/नहीं
- शौचालय में पानी की व्यवस्था है ........... हाँ/नहीं

## (स) अकादमिक पक्ष

1. विद्यालय में समय-सारणी की व्यवस्था ........ स्थाई निर्मित/सुविधानुसार/परिवर्तनशील

2. विद्यालय अवलोकन के दौरान विद्यालय का संचालन हो रहा था ........ ............................................ स्थाई समय सारणीनुसार/सुविधाअनुसर/परिवर्तनशील समय सारणीनुसार

3. विद्यालय का प्रारंभ नियमित प्रार्थना से होता है ....... हाँ/नहीं

4. प्रार्थना सभा में सभी बच्चे व स्टॉफ नियमित रूप से उपस्थित रहते हैं ........ हाँ/नहीं

5. क्या सभी छात्र गणवेश में आते हैं ................. हाँ/नहीं

6. बच्चों के गणवेश में न आने का कारण ................ गणवेश गंदी/फट गई/गणवेश नहीं है

7. विद्यालय अवलोकन के दौरान पाठ्य सहगामी क्रियाओं का

   आयोजन होता है पाया गया ............................... हाँ/नहीं

8. कौन-कौन सी पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के आयोजन का अवलोकन किया गया।

    1.
    2.
    3.
    4.
    5.

9. पाठ्य-सहगामी क्रियाओं के स्तर पर अवलोकनकर्ता के रूप में आपकी टिप्पणी –

   (अ) सामान्य (ब) सामान्य के कम (क) उत्कृष्ट

10. क्या बच्चों को नियमित गृहकार्य दिया जाता है ? .... हाँ/नहीं । यदि हाँ तो पाठ्यपुस्तकों की स्थिति कटी-फटी/साफ/साफ-स्वच्छ/सामान्य /कवर सहित।

12. विद्यालय अवलोकन के दौरान बच्चों के साथ गतिविधियों के दौरान कौन-कौन से व्यक्तिगत सामाजिक गुणों को विकसित किया गया..... नियमित समयवद्धता/स्वच्छता/अनुशासन/सहयोग की भावना/पर्यावरण के प्रति संवेदनाशीलता नेतृत्व की क्षमता/ईमानदारी/सहभागिता/कर्तव्यनिष्ठ

13. विद्यालय में किन-किन कार्यक्रमों में समुदाय की सहभागिता परिलक्षित होती है। उपलब्ध रिकार्ड एवं कार्यक्रम के फोटोग्राफ के आधार पर लिखे .......................................

14. शिक्षक पालक संघ की नियमित बैठक होती है।.............................. हाँ/नहीं

15. 2 अक्टूबर/14 नवम्बर/15 अगस्त एवं 26 जनवरी के कार्यक्रम होते हैं उपलब्ध रिकार्ड एवं फोटोग्राफ के आधार पर ............................................................ हाँ/नहीं

16. विद्यालय प्रबंधन समिति (SMC) के द्वारा नियमित जांच होती है.......................... हाँ/नहीं

17. क्या विद्यालय प्रबंधन समिति द्वारा अनुपस्थित बच्चोंको विद्यालय में लाने के लिए प्रयास किया गया ....................... हाँ/नहीं। यदि हाँ, तो कितने बच्चों का। ......................

18. शिक्षक द्वारा बच्चों के पालकों से चर्चा की गई है (रिकार्ड अवलोकन) ........................ हाँ/नहीं
यदि हाँ तो कब की गई, दिनांक.................................................

19. क्या विद्यालय में प्रत्येक बच्चे का फोर्टफोलियो संघारित किया गया है.......................... हाँ/नहीं

20. क्या विद्यालय का एकडोनल रिकार्ड उपलब्ध है .......................................... हाँ/नहीं

21. क्या विद्यालय में ऑलराडण्डर (उत्कृष्ट) बच्चों के नाम सूचना पटल पर प्रदर्शित है......... हाँ/नहीं

22. क्या बच्चों को यूनीफार्म/साइकिल/छात्रवृत्ति का वितरण हो रहा है? .......................... हाँ/नहीं

| | |
|---|---|
| विद्यालय प्रमुख के हस्ताक्षर (सिल सहित) | छात्राध्यापक के हस्ताक्षर ............................... |
| नाम :................................................ | नाम:........................................................ |
| संस्था का नाम :.................................... | संस्था का नाम :............................................ |
| दिनांक :............................................ | दिनांक :..................................................... |

# 3. पाठ्य सहगामी क्रिया का आयोजन एवं प्रबंधन

इसके अंतर्गत छात्राध्यापकों को पाठ्य सहगामी क्रिया क्या होती है, इसकी आवश्यकता एवं महत्व, पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार, उनका आयोजन एवं प्रबंधन कैसे करते हैं? इन बिन्दुओं पर लिखना है । किन्हीं पाँच पाठ्य सहगामी क्रियाओं को अपने विद्यालय में आयोजित कराके इसकी रिपोर्ट तैयार करनी है –

1. पाठ्य सहगामी क्रियाएँ
2. आवश्यकता एवं महत्व
3. पाठ्य सहगामी क्रियाओं के प्रकार
4. आयोजन
5. प्रबंधन

**पाठ्य सहगामी क्रियाएँ –**

शिक्षा समाज में, समाज के द्वारा समाज के लिए दी जाती है। शिक्षक और समाज का घनिष्ठ संबंध है। शिक्षा समाज में परिवर्तन लाने का सार्थक एवं सशक्त साधन है। शिक्षा की प्रक्रिया के द्वारा ही नए युवकों में ऐसे गुणों का विकास किया जा सकता है जो स्वस्थ समाज के लिए वांछनीय है। बालक के सर्वांगीण विकास हेतु निम्न पक्षों के विकास आवश्यक हैशारीरिक -, मानसिक, सामाजिक और भावात्मक विकास । पाठ्यक्रम के अंतर्गत विद्यालय के विषयों के शिक्षण में छात्रों के ज्ञानात्मक पक्ष का विकास अधिक होता है। लेकिन भावात्मक और क्रियात्मक पक्षों का विकास नहीं हो पाता इसलिए इन पक्षों के विकास के लिए पाठ्य सहगामी क्रियाओं का सहारा लिया जाता है। विद्यालयों में आज हम इन क्रियाओं को शिक्षा पद्धति का महत्वपूर्ण अंग स्वीकार करते हैं । पाठ्यक्रम का आज जब विकसित अर्थ लिया जाता है तो समुचित विकास के लिए इन सहगामी क्रियाओं को पाठ्यक्रम में उचित स्थान देना आवश्यक है।

पाठ्य सहगामी क्रियाएं छात्रों को अच्छा नागरिक बनने का प्रशिक्षण देती हैं । ऐसी गतिविधियाँ विद्यार्थियों को स्कूल में व्यस्त रखती है। पाठ्य सहगामी क्रियाएं शिक्षण में श्रेष्ठ स्थान रखती है और विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में पूरक्षमता से आगे निकलकर विकास करता पूरा योगदान देती है। इनमें शामिल होकर छात्र अपने गुणों की है। उनमें आत्मनिर्भरता आती है। वे किसी भी कार्य को पूर्ण करने के लिए सक्षम बनते है।

**पाठ्य सहगामी क्रियाएं की उपयोगिताएवं महत्व**

- इनसे छात्रों में नागरिक के गुणों के विकास हेतु अवसर प्रदान किया जाते है।
- छात्रों में नेतृत्व के गुणों का विकास होता है।
- छात्रों को नवीन प्रकार की अभिरुचियों के विकास के लिए अवसर मिलते है।

- पाठ्य सहगामी क्रियाओं  के अंतर्गत छात्रों में समाजीकरण होता होता है।
- इन गतिविधियों के माध्यम से बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है।
- सभी को अपनी प्रतिभा दिखाने के समान अवसर मिलते है।
- किसी भी गतिविधि के दौरान विद्यार्थियों में आपस में सामाजिक अंतर्क्रिया होती है, जिनसे उन्हें आपस में बहुत कुछ सीखने के अवसर प्राप्त होते है।
- विद्यार्थियों में आत्मविश्वास का विकास होता है।
- उनमें पारस्पारिक सहभागिता का विकास होता है ।
- उनमे सीखने की रूचि उत्पन्न करता है ।
- समूह अधिगम में सहायक होता है ।

**पाठयक्रम गतिविधियाँ के आयोजन में शिक्षक की भूमिका**

1. शिक्षक को एक अच्छा योजनाकार होना चाहिए ताकि विभिन्न गतिविधियों को व्यवस्थित ढंग से पूरा किया जा सके।
2. शिक्षक का कर्तव्य होना चाहिए कि वह पाठयक्रम गतिविधियों प्रदर्शन करते हुए बच्चों को अधिक से अधिक अवसर दे।
3. शिक्षक को एक अच्छा आयोजक होना चाहिए ताकि छात्रों को गतिविधियों के बारे में अधिक से अधिक लाभ मिल सके ।

**पाठ्य सहगामी क्रियाओं  के प्रकार–**

पाठ्य सहगामी क्रियाएँ निम्नलिखित प्रकार की होती हैं -

1. सामूहिक परेड
2. कबड्डी
3. खो-खो
4. हाथ गेंद
5. लंबी पैदल यात्रा
6. सामूहिक प्रार्थना
7. सुबह की सभा
8. पड़ोस में समाज सेवा
9. गांव सर्वेक्षण
10. वालीबाल
11. सामूहिक ड्रिल
12. योग
13. व्यायाम
14. साइकिल चलाना
15. बागवानी

16. क्रिकेट
17. फ़ुटबॉल
18. बास्केटबाल

**इंडोर सह पाठयक्रम गतिविधिओं की सूची**

1. नाटक
2. संगीत और नृत्य
3. चित्रांकन और रंगाई
4. सजावट
5. क्ले मॉडलिंग
6. प्राथमिक चिकित्सा
7. सिलाई
8. रंगोली
9. बुक बाइंडिंग
10. कार्ड बोर्ड काम
11. चमड़े का काम
12. आयोजन स्कूल पंचायत
13. कला और शिल्प

**आयोजन** – पाठ्य सहगामी क्रिया को आयोजित करने में छात्राध्यापकों को प्रारम्भ से अंत तक किए गए कार्यों का उल्लेख करना है। जैसे –

1. सूचना निकालना
2. दिनाँक एवं स्थान का चयन
3. प्रतियोगियों के नाम
4. प्रतियोगिता के नियम
5. निर्णायक मण्डल का चयन
6. निर्णायकों को सूचना देना
7. परिणाम का रिकार्ड बनाना
8. समाचार पत्र में सूचना भेजना

**प्रबंधन** – इसके अंतर्गत प्रतियोगिता कराने के लिए एक समिति का गठन किया जाएगा समिति गठन के उपरांत उसकी बैठक आयोजित की जाएगी जिसमें प्रतियोगिता का दिनाँक ,समय ,एवं स्थान निर्धारित किया जाएगा और सदस्यों के कार्य का विभाजन किया जाएगा। प्रतियोगिता की सम्पूर्ण तैयारी के साथ नियम बनाना ,आयोजन करना , इसकी रिपोर्ट तैयार करना एवं अंत में कार्यक्रम के बाद समीक्षा बैठक आयोजित करना कि कार्यक्रम कितना सफल रहा एवं इसमें क्या–क्या कमियाँ रहीं उनको लिखना।

# 4. विद्यालय दैनिकी अवलोकन प्रतिवेदन

विद्यालय संपर्क कार्यक्रम के दौरान सभी अध्येताओं से यह अपेक्षित है कि वे विद्यालयदैनन्दिनी का निर्माण करेंगे जिसमें वे अपने अनुभवों, विचारों, भावनाओं एवं विद्यालय में घटितप्रसंगों एवं घटनाओं का विवरण तिथिवार नियमित रूप से लिखेंगे| अध्येता प्रत्येक विद्यालय कार्य दिवस के उपरांत पूरे दिन की गतिविधियों पर गहन विचार, आत्म-मंथन एवं आत्म विश्लेषण करके अपने अनुभवों का दैनिकी में उल्लेख करेंगे |यह अभ्यास प्रतिदिन बिना विलम्ब किया जाना चाहिए ताकि घटनाएं विस्मृत न हों| इसके लिए अध्येता को रोज़ 15 से 30 मिनट का समय देना होगा| इसमें अध्येता निम्नलिखित बिन्दुओं घटनाओं या अनुभवों को शामिल कर सकते हैं/

- उन्होंने पूरे दिन में किन गतिविधियों में सहभागितादी?
- उसने पूरे दिन में क्या- क्या किया ?
- किस प्रकार किया ?
- क्या उसे करने का कोई और बेहतर तरीका हो सकता है?
- आगे चलकर वे इनमें किस तरह से और किस प्रकार के सुधार लाना चाहेंगे?
- उन्होंने क्या कुछ नया सीखा?
- कोई ऐसी घटना या प्रसंग जो उन्हें अलग या सीखने योग्य लगा|
- अपने साथी अध्येताओं, शिक्षक, विद्यालय के अध्यापक, विद्यार्थी आदि के साथ हुए वार्तालाप या सम्प्रेषण से जनितसृजित अनु/भव, भावनाएं एवं विचार|
- शैक्षिक सिद्धांतों एवं यथार्थ संकल्पनाओं के समन्वय अथवा भेद से उत्पन्न भाव एवं विचार आदि|

नयी अवधारणाओं कोसमावेशित करने एवं विद्यालय में विद्यमान जटिल वास्तविकताओं के साथ परस्पर सम्बन्ध स्थापित करने का प्रयास कर रहे अध्येताओं के लिए यह एक उपयोगी अभ्यास सिद्ध होगा| इससे उनमें आत्म-मूल्यांकन का कौशल विकसित होता है| इसके द्वारा उनकी कार्य शैली प्रखर एवं परिष्कृत होगी|

अध्येता अपनी दैनिकी में दर्ज़ पूर्व प्रविष्टियों एवं विचारों का समय-समय पर पुनरावलोकन करेंगे| इससे वे अपने विचारों एवं समझ की प्रगति का निरीक्षण, मूल्यांकन तथा सराहना करने में सक्षम होंगे| इस प्रतिवेदन को छात्राध्यापक द्वारा निम्नलिखित बिन्दुओं के अनुसार विस्तृत रूप से लिखा जाएगा -

**नाम छात्राध्यापक ----------------------------**

**विद्यालय का नाम --------------------------**

**सत्र ------------------------------------------**

1. विद्यालय गतिविधियों में सहभागिता का विवरण |
2. दिनभर में क्या –क्या कार्य किये ?
3. किये गए कार्यो को किस प्रकार किया ?
4. इन कार्यो को करने का कोई बेहतर तरीका हो तो लिखिए |
5. आप इन कार्यों में आगे चलकर क्या सुधार करना चाहेंगे?
6. आपने आज क्या नया सीखा ?
7. कोई ऐसी घटना या प्रसंग जो आप को सीखने योग्य लगा |
8. अपने साथी ,शिक्षक , विद्यार्थी आदि से बातचीत से प्राप्त अनुभव, विचार |
9. शैक्षिक सिद्धांतों एवं यथार्थ संकल्पनाओ के समन्वय अथवा भेद से उत्पन्न भाव एवं विचार|

❖

ज्ञान शांति मैत्री

# दूरशिक्षा निदेशालय

# महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा-442001 (महाराष्ट्र)

ज्ञान शांति मैत्री

## परिचर्चा

## मातृभाषा में दूरस्थ शिक्षा : नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के परिप्रेक्ष्य में

**अध्यक्षता**

**आचार्य रजनीश कुमार शुक्ल**

कुलपति, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

**मुख्य अतिथि**

**प्रो. गंगा प्रसाद प्रसेन**

कुलपति, त्रिपुरा केन्द्रीय विश्वविद्यालय

**सारस्वत अतिथि**

**डॉ. अनिल जोशी,** उपाध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान

**परिचर्चा में सम्मिलित प्रमुख वक्ता**

**डॉ. रमा शर्मा**
प्राचार्या, हंसराज कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. मनोज खन्ना**
प्राचार्य, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. रवीन्द्र कुमार गुप्ता**
प्राचार्य, पी.जी.डी.ए.वी. (सांध्य) कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. प्रत्यूष वत्सला**
प्राचार्या, लक्ष्मीबाई कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ.साधना शर्मा**
प्राचार्या, श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. ममता शर्मा**
प्राचार्या, अदिति कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. कल्पना भाकुनी**
प्राचार्या, कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. प्रवीण गर्ग**
प्राचार्य, स्वामी श्रद्धानंद कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. संध्या गर्ग**
उपप्राचार्या, जानकी देवी मेमोरियल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. विजय शंकर मिश्र**
प्राचार्य, सत्यवती कॉलेज (सांध्य), दिल्ली विश्वविद्यालय

**डॉ. हरितमा चोपड़ा**
प्राचार्या, मैत्रेयी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

**दिनांक : 5 मार्च, 2021 / समय : अपराह्न 4 बजे**

**स्थान : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, मान सिंह रोड, नई दिल्ली**

भारत की आज़ादी का अमृत महोत्सव
इंडिया@75 आज़ादी का अमृत महोत्सव
सत्यमेव जयते
ज्ञान शांति मैत्री
दूर शिक्षा निदेशालय, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस तथा भारतीय उच्चायोग, त्रिनिदाद एवं टोबागो
न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फ़ाउंडेशन एवं सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका
के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित
अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी
'वैश्विक हिंदी की चुनौतियाँ एवं उनके भाषा वैज्ञानिक समाधान'
शनिवार, 17 अप्रैल 2021
भारत : सायं 20:00 बजे
मॉरीशस : सायं 18:30 बजे
त्रिनिदाद एवं टोबागो : सुबह 10:30 बजे
अध्यक्ष
प्रो. रजनीश कुमार शुक्ल
माननीय कुलपति
म.गा.अ.हि.विवि, वर्धा
मुख्य अतिथि
श्री अरुण कुमार साहू
महामहिम भारतीय उच्चायुक्त
त्रिनिदाद एवं टोबागो
मुख्य वक्ता
डॉ. वरुण कुमार
निदेशक
केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार
सान्निध्य / निवेदक / संयोजक
प्रो. विनोद कुमार मिश्र
महासचिव
विश्व हिंदी सचिवालय
संचालन / निवेदक / संयोजक
डॉ. शैलेश शुक्ला
प्रधान संपादक
सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका
निवेदक / संयोजक
डॉ. प्रियंका मिश्र
सह प्राध्यापक
दूर शिक्षा निदेशालय
म.गा.अ.हि.विवि, वर्धा
श्री शिव कुमार निगम
द्वितीय सचिव
(भाषा, शिक्षा एवं संस्कृति)
भारतीय उच्चायोग
त्रिनिदाद एवं टोबागो
श्रीमती पूनम चतुर्वेदी शुक्ला
संस्थापक-निदेशक
न्यू मीडिया सृजन संसार ग्लोबल फाउंडेशन
एवं
मुख्य कार्यकारी अधिकारी,
सृजन ऑस्ट्रेलिया अंतरराष्ट्रीय ई पत्रिका
गूगल मीट लिंक : https://meet.google.com/hbd-swky-yia
लाइव
https://www.facebook.com/SrijanAustraliaInternationalEJournal
https://www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay